मजदूर वर्ग और उसकी पार्टी

इस लेख का उद्देश्य मजदूर वर्ग और उसकी पार्टी के बारे में परंपरागत या 'रुढ़िवादी' मार्क्सवादी-लेनिनवादी विचारों को एक बार फिर रेखांकित करना है। ये वही विचार हैं जिन पर बोल्शेविक पार्टी का निर्माण हुआ था तथा जिन पर स्तालिन और माओ आजीवन चलते रहे। इनके नेतृत्व में रूस और चीन की पार्टियां इन्हीं विचारों पर अमल करती रहीं।

ऐसा करना इसलिए जरूरी हो जाता है कि समाजवाद की वक्ती पराजय तथा पूंजीपति वर्ग के धुंआधर प्रचार ने कम्युनिस्ट क्रांतिकारियों के बीच भी इन स्थापित बातों के बारे में संदेह पैदा किया है। दबे-छिपे ढंग से ऐसी बातें की जाती हैं जिनका वास्तविक आशय मजदूर वर्ग की पार्टी, कम्युनिस्ट पार्टी के बारे में मार्क्सवादी-लेनिनवादी सिद्धान्तों का नकार होता है। आज जबकि समूचा कम्युनिस्ट क्रांतिकारी आंदोलन छोटे-छोटे ग्रुपों में बिखरा हुआ है तथा हर देश में एकीकृत कम्युनिस्ट पार्टी का गठन सर्वोच्च कार्यभार है, तब इस तरह की बातें और भी गंभीर खतरा बन जाती हैं।

I
मजदूर वर्ग की ऐतिहासिक भूमिका और नियति

मजदूर वर्ग इतिहास का सबसे क्रांतिकारी वर्ग है। समाज में अपनी स्थिति तथा तद्जन्य चरित्र के कारण ही वह ऐसा वर्ग बनता है जो पूंजीवादी व्यवस्था को समाप्त कर मानव इतिहास के एक सर्वथा नये युग, वर्ग विहीन राज्य विहीन युग में मानव समाज को ले जायेगा। यही मजदूर वर्ग की ऐतिहासिक भूमिका और ऐतिहासिक नियति है।

वैज्ञानिक समाजवाद के संस्थापकों, मार्क्स और एंगेल्स ने वैज्ञानिक समाजवाद के सैद्धान्तिक विकास के एकदम शुरूआती दौर में ही मजदूर वर्ग की इस भूमिका को इस रूप में प्रस्तुत किया था :

> " ... ... सर्वहारा स्वयं को मुक्त कर सकता है और उसे करना ही होगा। लेकिन बिना अपने जीवन की अवस्थाओं का उन्मूलन किये हुए यह अपने को मुक्त नहीं कर सकता। यह आज के समाज के जीवन की ***सभी*** अमानवीय अवस्थाओं का, जो स्वयं इसकी अपनी स्थिति में घनीभूत हैं , उन्मूलन किये बिना अपने जीवन की अवस्थाओं का उन्मूलन नहीं कर सकता। यह यूं ही ***श्रम*** के कठोर विद्यालय से नहीं गुजरता। सवाल यह नहीं है कि यह या वह सर्वहारा या यहां तक कि समूचा सर्वहारा वर्ग किसी समय अपना कौन सा लक्ष्य ***समझता*** है। सवाल यह है कि सर्वहारा वर्ग ***क्या*** है और अपने ***अस्तित्व*** के कारण यह ऐतिहासिक तौर पर क्या करने को मजबूर होगा।" **(Marx & Engels, the Holy Family, Internet Edition, MIA,** अनुवाद हमारा, जोर मूल में)

इसी बात को उन्होंने कुछ समय बाद इस रूप में प्रस्तुत किया :

> "(लोगों और उन द्वारा उत्पादित वस्तुओं के बीच -लाल सलाम) यह ***'अलगाव'***(यह एक ऐसा शब्द है जिसे दार्शनिक समझ लेंगे) निस्संदेह दो ***व्यावहारिक*** पूर्वाधारों के होने पर ही मिटाया जा सकता है। "असहनीय" शक्ति, अर्थात ऐसी शक्ति बनने के लिए, जिसके खिलाफ लोग क्रांति करते हैं, उसे अवश्य ही मानवजाति के बहुत बड़े समूह को 'सम्पत्तिविहीन' बनाना होगा तथा साथ ही सम्पदा और संस्कृति के विद्यमान संसार में अंतर्विरोध पैदा करना होगा, इन दोनों चीजों के लिए उत्पादक शक्तियों में बहुत अधिक वृद्धि, उनके विकास के उच्च परिणाम को आवश्यक बनाना होगा। दूसरी ओर उत्पादक शक्तियों का यह विकास (जिसमें मनुष्यों के स्थानीय अस्तित्व के बजाय उनका यथार्थ इंद्रियगोचर ***विश्व-ऐतिहासिक*** अस्तित्व अंतर्निहित है) एक नितान्त आवश्यक व्यावहारिक पूर्वाधार है क्योंकि उसके बिना केवल ***अभाव ही*** आम बनता है, और ***दारिद्र्य*** के होने पर आवश्यक वस्तुओं के लिए संघर्ष तथा सारा पुराना कुत्सित धन्धा अवश्य ही पुनरुत्पादित होगा; दूसरा कारण यह है कि केवल उत्पादक शक्तियों के इस सार्वत्रिक विकास के होने पर ही मनुष्यों के बीच ***सार्वत्रिक*** संसर्ग स्थापित होता है, जो तमाम जातियों में एक साथ 'संम्पत्तिविहीन' समूह विद्यमान होने के तथ्य को प्रत्यक्ष करता है (सार्वत्रिक प्रतियोगिता), हर जाति को दूसरों की क्रांतियों पर आश्रित बनाता है, और अन्त में ***विश्व ऐतिहासिक***, इंद्रियानुभव की दृष्टि से सार्वत्रिक मनुष्यों को स्थानीय मनुष्यों की जगह खड़ा कर देता है। इसके बिना (1) कम्युनिज्म केवल स्थानीय घटना के रूप में ही जीवित रह पाता, (2) खुद संसर्ग की ***शक्तियां सार्वत्रिक*** और इस कारण असहनीय शक्तियों के रूप में विकसित न हो पातीं: वे अन्धविश्वास से घिरी घरेलू 'अवस्थाएं' बनी रहतीं; और (3) संसर्ग का प्रत्येक विस्तार स्थानीय कम्युनिज्म को मिटा देगा। इंद्रियानुभव की दृष्टि से कम्युनिज्म प्रभुत्वशाली राष्ट्रों की 'एकदम' और साथ-साथ कार्यवाही के रूप में ही संभव है जो उत्पादक शक्तियों के तथा उसके साथ जुड़े विश्व संसर्ग के सार्वत्रिक विकास की पूर्व कल्पना करता है।
>
> " इसके अलावा, ***सम्पत्तिविहीन*** मजदूरों का समूह -पूंजी से अथवा सीमित तुष्टि तक से बहुत बड़े पैमाने पर पृथक्कीकृत श्रम शक्ति की घोर संकटापन्न स्थिति जो इस कारण आजीविका के सुरक्षित स्रोत से मात्र अस्थाई रूप से ही वंचित

नहीं रहती -प्रतियोगिता की बदौलत ***विश्व मंडी*** की पूर्वकल्पना करता है। सर्वहारा का अस्तित्व इस प्रकार केवल ***विश्व ऐतिहासिक*** रूप से ही हो सकता है, ठीक वैसे ही जैसे कम्युनिज्म का, उसके क्रिया-कलाप का केवल 'विश्व ऐतिहासिक' अस्तित्व ही हो सकता है। व्यक्तियों का विश्व ऐतिहासिक अस्तित्व उनका ऐसा अस्तित्व है जो विश्व इतिहास के साथ प्रत्यक्ष रूप से जुड़ा हुआ है।" (मार्क्स और एंगेल्स, फायरबाख -भौतिकवादी तथा भाववादी दृष्टिकोण का विरोध ('जर्मन विचारधारा' का पहला अध्याय), संकलित रचनाएं, तीन खंडों में, प्रगति प्रकाशन, मास्को, 1978, खण्ड-1 भाग-1,पृष्ठ-41-42, जोर मूल में)

मजदूर वर्ग की इस विश्व ऐतिहासिक भूमिका के कुछ अन्य पहलुओं को रेखांकित करते हुए मार्क्स और एंगेल्स यह लिखते हैं :

"अंततः इतिहास के इस संप्रत्ययन से, जिसकी हमने रूपरेखा खींची है, हम ये और निष्कर्ष निकालते हैं : (1) उत्पादक शक्तियों के विकास में एक ऐसी मंजिल आती है जब ऐसी उत्पादक शक्तियां तथा संसर्ग के साधन अस्तित्व में आते हैं जो मौजूदा संबंधों के अंतर्गत केवल मुसीबत पैदा करते हैं-और उत्पादक नहीं बल्कि विनाशकारी शक्तियां (मशीनें और मुद्रा) बन जाते हैं; और उसके साथ एक ऐसा वर्ग आविर्भूत होता है, जिसे समाज के लाभों का उपभोग किये बिना उसके सारे बोझ ढोने पड़ते हैं, जो समाज से बहिष्कृत होकर तमाम अन्य वर्गों का सबसे अधिक निश्चित विरोध करने के लिए विवश होता है; वह ऐसा वर्ग है जो समाज के समस्त सदस्यों का बहुसंख्य भाग होता है और जिसमें से आधारभूत क्रांति की आवश्यकता की चेतना, कम्युनिस्ट चेतना उत्पन्न होती है, वह चेतना, निस्संदेह, यदि इस वर्ग की स्थिति ठीक-ठीक समझी जाये, अन्य वर्गों के अन्दर भी उत्पन्न हो सकती है; (2) जिन अवस्थाओं के अंतर्गत निश्चित उत्पादक शक्तियों को प्रयुक्त किया जा सकता है, वे समाज के एक निश्चित वर्ग के शासन की अवस्थाएं हैं जिसकी सामाजिक शक्ति को, जिसे वह अपनी सम्पत्ति से प्राप्त करता है, अपनी ***व्यावहारिक*** -भाववादी अभिव्यक्ति हर बार राज्य के रूप में मिलती है; और इसलिए प्रत्येक क्रांतिकारी संघर्ष उस वर्ग के विरुद्ध लक्षित होता है, जो उस समय सत्तारूढ़ होता है; (3) अब तक की तमाम क्रांतियों में क्रियाकलाप का स्वरूप सदैव अछूता रहा है और वह इस क्रियाकलाप के भिन्न वितरण का, अन्य लोगों के बीच श्रम के नये वितरण का प्रश्न मात्र था, जबकि कम्युनिस्ट क्रांति क्रियाकलाप की पूर्ववर्ती ***विधि*** के विरुद्ध लक्षित होती है, वह ***श्रम*** ([पांडुलिपि में ये शब्द कटे हुए हैं :] क्रियाकलाप का वह रूप जिसके अंतर्गत ... का ... शासन) का अंत कर देती है, और स्वयं वर्गों समेत तमाम वर्गों का शासन मिटा देती है क्योंकि वह एक ऐसे वर्ग द्वारा सम्पन्न की जाती है जिसे समाज के वर्ग के रूप में नहीं गिना जाता, वर्ग के रूप में मान्यता नहीं दी जाती, तथा जो वर्तमान समाज के अन्दर तमाम वर्गों, जातियों आदि के विघटन की अभिव्यक्ति होता है; और (4) इस कम्युनिस्ट चेतना के बड़े पैमाने पर उत्पत्ति के लिए तथा स्वयं ध्येय की सफलता के लिए बड़े पैमाने पर मनुष्यों का परिवर्तन होना आवश्यक होता है जो केवल एक व्यावहारिक आंदोलन, एक क्रांति में ही सम्भव है; इस तरह यह क्रांति केवल इसीलिए आवश्यक नहीं होती कि ***शासक*** वर्ग का तख्ता और किसी तरह नहीं उलटा जा सकता, बल्कि इसलिए भी आवश्यक होती है उसका तख्ता ***उलटनेवाला*** वर्ग केवल क्रांति से ही युगों-युगों की सारी गंदगी से छुटकारा पा सकता है तथा समाज को नये सिरे से स्थापित करने के उपयुक्त बन सकता है।" (वही, पृष्ठ -46-47, जोर मूल में)

उत्पादन के हस्तगतकरण की प्रणाली के पहलू से चर्चा करते हुए मार्क्स-एंगेल्स सर्वहारा वर्ग और उसकी क्रांति के बारे में यह बात कहते हैं :

"यह हस्तगतकरण हस्तगत की जाने वाली वस्तु द्वारा उत्पादक शक्तियों द्वारा निर्धारित होता है जो समग्र रूप में विकसित की जा चुकी होती हैं तथा जो केवल सार्वत्रिक संसर्ग के अंदर विद्यमान होती हैं। इसलिए अकेले इसी पहलू के कारण हस्तगतकरण का उत्पादक शक्तियों तथा संसर्ग से मेल खाने वाला सार्वत्रिक स्वरूप होना चाहिए। इन शक्तियों का हस्तगतकरण उत्पादन के भौतिक औजारों से मेल खानेवाली क्षमताओं के विकास से अधिक और कुछ नहीं है। ठीक इसी कारण उत्पादन-उपकरणों की समग्रता का हस्तगतकरण स्वयं व्यक्तियों की क्षमताओं की समग्रता का विकास है।

"इसके अलावा यह हस्तगतकरण हस्तगत करने वाले व्यक्तियों द्वारा निर्धारित होता है। केवल वर्तमान काल के सर्वहारा ही, जो सारी स्व-क्रिया से पूरी तरह बाहर होते हैं, पूर्ण तथा असीमित स्व-क्रिया हासिल करने की स्थिति में होते हैं जिसमें उत्पादक शक्तियों का समग्र रूप से हस्तगतकरण तथा इस तरह क्षमताओं का समग्र रूप से विकास निहित होता है। तमाम पूर्ववर्ती क्रांतिकारी हस्तगतकरण सीमित थे; व्यक्तियों ने, जिनकी स्व-क्रिया उत्पादन के अविकसित औजार तथा संसर्ग द्वारा प्रतिबंधित थी, उत्पादन के अविकसित औजार का हस्तगतकरण किया और इस कारण परिसीमन की एक नयी व्यवस्था ही हासिल की।उत्पादन का उनका औजार उनकी सम्पत्ति बन गया, परन्तु वे स्वयं श्रम-विभाजन तथा उत्पादन के अपने औजार के अधीन बने रहे। अब तक के समस्त हस्तगतकरणों में व्यक्तियों का समूह उत्पादन के एक ही औजार के अधीन बना रहा; सर्वहाराओं द्वारा किये जाने वाले हस्तगतकरण में उत्पादन के औजारों का समूह हर व्यक्ति के अधीन किया जाना चाहिए और सबकी सम्पत्ति बनायी जानी चाहिए। अतः आधुनिक सार्वत्रिक संसर्ग व्यक्तियों द्वारा तभी नियंत्रित किया जा सकता है जब वह सब द्वारा नियंत्रित हो।

"इसके अलावा हस्तगतकरण जिस ढंग से किया जाता है, वह उसे निर्धारित करता है। उसे इस तरह एकीकरण के जरिये, जो स्वयं सर्वहारा वर्ग के स्वरूप के कारण केवल सार्वत्रिक ही हो सकता है, तथा एक ऐसी क्रांति के जरिये किया जा सकता है जिसमें एक ओर उत्पादन तथा संसर्ग और सामाजिक संगठन की पूर्ववर्ती पद्धति की शक्ति को उलट दिया जाता है, और दूसरी ओर सर्वहारा के सार्वत्रिक स्वरूप तथा शक्ति का विकास होता है, जिसके बिना वह हस्तगतकरण सम्पन्न नहीं किया

जा सकता, और साथ ही इस क्रांति में सर्वहारा हर उस चीज से छुटकारा पाता है जो समाज में उसकी पूर्ववर्ती स्थिति के कारण उससे अब भी चिपकी हुयी होती है।" (वही, पृष्ठ-88-89)

इसी सम्बन्ध में ***कम्युनिस्ट पार्टी का घोषणापत्र*** यह कहता है :

"अब तक जिन-जिन वर्गों का पलड़ा भारी हुआ है, उन सबने अपने पहले से हासिल दरजे को मजबूत करने के लिए समाज को अपनी अधिकरण-प्रणाली के अधीन करने की कोशिश की है। सर्वहारा वर्ग अपनी अब तक की अधिकरण प्रणाली का और उसके साथ-साथ पहले की सभी अधिकरण-प्रणालियों का अन्त किये बिना समाज की उत्पादक शक्तियों का स्वामी नहीं बन सकता। सर्वहारा वर्ग के पास जोड़ने और सुरक्षित रखने के लिए अपना कुछ भी नहीं है; उसका जीवन लक्ष्य निजी सम्पत्ति की पुरानी सभी गारंटियों तथा जमानतों को नष्ट कर देना है।

" पहले के तमाम आंदोलन अल्पमत के आंदोलन रहे हैं या अल्पमत के फायदे के लिए रहे हैं। किन्तु सर्वहारा आंदोलन विशाल बहुमत का, विशाल बहुमत के फायदे लिए होने वाला चेतन तथा स्वतंत्र आंदोलन होता है।हमारे वर्तमान समाज का निचला स्तर, सर्वहारा वर्ग, शासकीय समाज की तमाम ऊपरी परतों को पलटे बिना हिल तक नहीं सकता, किसी प्रकार अपने को ऊपर नहीं उठा सकता।" (मार्क्स और एंगेल्स, कम्युनिस्ट पार्टी का घोषणापत्र, वही, पृष्ठ-142-143)

सर्वहारा वर्ग का विश्व ऐतिहासिक कार्यभार पूंजीवाद की इस गति के जरिये सम्पन्न होता है :

पूंजीपति वर्ग के अस्तित्व और प्रभुत्व की लाजिमी शक्ति पूंजी का निर्माण और वृद्धि है; और पूंजी की शर्त है उजरती श्रम। उजरती श्रम पूर्णतया मजदूरों की आपसी होड़ पर निर्भर है।उद्योग की उन्नति, जिसे पूंजीपति वर्ग अनिवार्यत: अग्रसर करता है, होड़ के कारण उत्पन्न मजदूरों के अलगाव की जगह पर उनका संसर्गजनित एका कायम कर देती है। इस तरह आधुनिक उद्योग का विकास पूंजीपति वर्ग के पैरों के नीचे से उस जमीन को ही खिसका देता है जिसके आधार पर वह उत्पादन करता है और पैदावार को हड़प लेता है। अत: पूंजीपति वर्ग सर्वोपरि अपनी कब्र खोदने वाला पैदा करता है। उसका पतन तथा सर्वहारा वर्ग की विजय दोनों समान रूप से अनिवार्य हैं।" (वही, पृष्ठ-144)

परन्तु यह ऐतिहासिक प्रक्रिया मजदूर वर्ग की क्रांति और उसके शासक वर्ग बनने के जरिये ही सम्पन्न हो सकती है। इसी के बाद सर्वहारा वे कदम उठा सकता हैं जो समाज को कम या ज्यादा समय में कम्युनिज्म की ओर ले जायेंगे। कम्युनिस्ट घोषणापत्र कहता है :

"ऊपर हम देख आये हैं कि मजदूर वर्ग की क्रांति का पहला कदम सर्वहारा वर्ग को ऊपर उठा कर शासक वर्ग के आसन पर बैठाना और जनवाद के लिए होने वाली लड़ाई को जीतना है।

"सर्वहारा वर्ग अपना राजनीतिक प्रभुत्व पूंजीपति वर्ग से धीरे-धीरे कर सारी पूंजी छीनने के लिए, उत्पादन के सारे औजारों को राज्य, अर्थात् शासक वर्ग के रूप में संगठित सर्वहारा वर्ग, के हाथों में केन्द्रीकृत करने के लिए तथा समग्र उत्पादक शक्तियों में यथाशीघ्र वृद्धि के लिए इस्तेमाल करेगा।" (वही,पृष्ठ-154)

शासक वर्ग के रूप में संगठित सर्वहारा वर्ग का, उसकी राज्य सत्ता का भविष्य क्या होगा?

"विकास क्रम में जब वर्गों के भेद मिट जायेंगे और सारा उत्पादन पूरे राष्ट्र के विशाल संघ के हाथ में संकेन्द्रित हो जायेगा, तब सार्वजनिक सत्ता अपना राजनीतिक स्वरूप खो देगी। राजनीतिक सत्ता, इस शब्द के असली अर्थ में, केवल एक वर्ग की दूसरे वर्ग का उत्पीड़न करने की संगठित शक्ति का नाम है। पूंजीपति वर्ग के खिलाफ अपने संघर्ष के दौरान, परिस्थितियों से मजबूर होकर, सर्वहाराओं को यदि अपने को एक वर्ग के रूप में संगठित करना पड़ता है, यदि क्रांति के जरिये वह स्वयं अपने को शासक वर्ग बना लेता है, और इस तरह उत्पादन की पुरानी अवस्थाओं का बलपूर्वक अन्त कर देता है, तो उन अवस्थाओं के साथ-साथ वह वर्ग विरोधों के अस्तित्व और, आम तौर पर, खुद वर्गों के अस्तित्व की अवस्थाओं का खात्मा कर देता है और इस प्रकार वह, एक वर्ग के रूप में, स्वयं अपने प्रभुत्व का भी खात्मा कर देता है।

" तब वर्गों तथा वर्ग विरोधों से बिंधे पुराने पूंजीवादी समाज के स्थान पर एक ऐसे संघ की स्थापना होगी जिसमें व्यष्टि की स्वतंत्र प्रगति समष्टि की स्वतंत्र प्रगति की शर्त होगी।" (वही, पृष्ठ-154)

इन्हीं बातों को एंगेल्स दूसरे शब्दों में इस तरह कहते हैं :

"... ... सर्वहारा वर्ग सार्वजनिक सत्ता पर अधिकार कर लेता है, और ऐसा करके उत्पादन के उन सामाजिक साधनों को, जो पूंजीपति वर्ग के हाथों से खिसकने लगते हैं, सार्वजनिक सम्पत्ति में बदल देता है। उत्पादन के साधनों ने अभी तक पूंजी का स्वरूप ग्रहण कर रखा था, लेकिन अब सर्वहारा वर्ग उनके इस स्वरूप को नष्ट कर देता है, और इस प्रकार उनके सामाजिक स्वरूप के विकास को सम्पूर्ण रूप से मुक्त कर देता है। अब से एक पूर्वनिश्चित योजना के अनुसार सामाजिक उत्पादन संभव हो जाता है। उत्पादन का विकास समाज के विभिन्न वर्गों के अस्तित्व को काल व्यतिक्रम बना देता है। जैसे-जैसे समाजिक उत्पादन से अराजकता गायब होती जाती है, वैसे-वैसे राज्य का राजनीतिक अधिकार भी समाप्त होता जाता है। मनुष्य अंतत: सामाजिक संगठन की अपनी पद्धति का स्वामी होता है, इसके साथ ही वह प्रकृति का शासक और स्वयं अपना स्वामी, स्वतंत्र होता है।

"सर्वव्यापी मुक्ति के इस कार्य को पूरा करना आधुनिक सर्वहारा वर्ग का ऐतिहासिक कर्तव्य है। ... ..."

(एंगेल्स, समाजवाद : काल्पनिक और वैज्ञानिक, राहुल फाउन्डेशन, लखनऊ, 2004, पृष्ठ-64-65)

सार्वजनिक सत्ता पर सर्वहारा वर्ग के अधिकार का काल, जिसमें पूंजवाद से कम्युनिज्म में संक्रमण सम्पन्न होता है वस्तुतः एक लम्बा काल होता है और इस काल में सर्वहारा का राज्य पूंजीपति वर्ग के ऊपर सर्वहारा वर्ग का अधिनायकत्व होता है। केवल इस अधिनायकत्व के जरिये ही यह संक्रमण सम्पन्न होता है। मार्क्स ने 1852 में जोसेफ वोडेमेयर को इस संबन्ध में यह लिखा था:

" ... ... जहां तक मेरा सवाल है, आधुनिक समाज में वर्गों के अस्तित्व की खोज करने के श्रेय का मैं अधिकारी नहीं हूं। न ही उनके सघर्ष की खोज करने का श्रेय मुझे मिलना चाहिए।मुझसे बहुत पहले ही पूंजीवादी इतिहासकार वर्गों के इस संघर्ष के ऐतिहासिक विकास का और पूंजीवादी अर्थशास्त्री वर्गों की आर्थिक बनावट का वर्णन कर चुके थे। मैने जो नयी खोज की वह यह सिद्ध करना था कि (1) ***वर्गों का अस्तित्व उत्पादन के विकास के खास ऐतिहासिक दौर के साथ*** बंधा हुआ है; (2) वर्ग संघर्ष लाजिमी तौर से ***सर्वहारा वर्ग के अधिनायकत्व*** की दिशा में ले जाता है; (3) यह अधिनायकत्व स्वयं ***सभी वर्गों के उन्मूलन*** तथा ***वर्गविहीन*** समाज की ओर संक्रमण मात्र है, ... " (वही, खण्ड-1, भाग-2, पृष्ठ-296-97, जोर मूल में)

इसके करीब 40 साल बाद पेरिस कम्यून की बीसवीं वर्षगांठ पर पेरिस कम्यून के महत्व का मूल्यांकन करते हुए एंगेल्स ने यह कहा था:

"इधर कुछ समय से सामाजिक-जनवादी कूपमण्डूक एक बार फिर 'सर्वहारा का अधिनायकत्व' शब्दों से बेतरह बौखलाने लगे हैं। तो ठीक है सज्जनो! क्या आप जानते हैं कि इस अधिनायकत्व का असली रूप क्या है? पेरिस कम्यून को देख लीजिये। यही था सर्वहारा का अधिनायकत्व।"(वही, खण्ड-2, भाग-1, पृष्ठ-249)

II
मजदूर वर्ग और उसकी विचारधारा

अभी तक जो कुछ कहा गया है वह मजदूर वर्ग की ऐतिहासिक भूमिका और नियति को एक वस्तुगत ऐतिहासिक गति के रूप में पेश करता है। मजदूर वर्ग का कोई सदस्य या समूचा मजदूर वर्ग इस ऐतिहासिक गति के प्रति सचेत है या नहीं, इससे इस पर कोई फर्क नहीं पड़ता।

लेकिन मजदूर वर्ग अपनी ऐतिहासिक भूमिका के प्रति सचेत हुए बिना अपने ऐतिहासिक कार्यभार को सम्पन्न नहीं कर सकता। उसे यह कर सकने के लिए 'अपने आप में वर्ग' से 'अपने लिए वर्ग' की स्थिति तक पहुंचना ही होगा। लेकिन यह प्रक्रिया कैसे सम्पन्न होती है? मजदूर वर्ग कैसे सचेत होता है, वह अपनी विचारधारा तक कैसे पहुंचता है?

एंगेल्स ने 'समाजवाद: काल्पनिक और वैज्ञानिक' में मजदूर वर्ग का ऐतिहासिक कार्यभार बताने के ठीक बाद यह लिखा था:

"सर्वव्यापी मुक्ति के इस कार्य को पूरा करना आधुनिक सर्वहारा वर्ग का ऐतिहासिक कर्तव्य है। इस कार्य की ऐतिहासिक अवस्थाओं को और इस तरह इस कार्य की प्रकृति को, पूरी तरह समझना, और आज के जिस पीड़ित सर्वहारा वर्ग को यह महत्वपूर्ण कार्य पूरा करना है, उसे इसके महत्व और इसकी अवस्थाओं का संपूर्ण ज्ञान देना-वह सर्वहारा आंदोलन की सैद्धान्तिक अभिव्यक्ति का, वैज्ञानिक समाजवाद का कर्तव्य है।" (वही, पृष्ठ- 65)

वस्तुतः इस पुस्तिका के बिलकुल शुरूआत में ही एंगेल्स यह कहते हैं :

" आधुनिक समाजवाद सारतः दो बातों की मान्यता का प्रत्यक्ष फल है - एक ओर आज के समाज में मालिकों और गैर मालिकों, पूंजीपतियों और वेतनभोगी मजदूरों के वर्ग विरोध की, और दूसरी ओर उत्पादन में फैली हुयी अराजकता की। परन्तु अपने सैद्धान्तिक रूप में आधुनिक समाजवाद मूलत:अठारहवीं शताब्दी के फ्रांसीसी दार्शनिकों द्वारा स्थापित सिद्धान्तों का प्रत्यक्ष ही एक अधिक युक्तिसंगत विस्तार मालूम पड़ता है। हर नये सिद्धान्त की तरह आधुनिक समाजवाद को भी आरम्भ में उपलब्ध विचार-सामग्री के साथ अपना सम्बन्ध जोड़ना पड़ा, भौतिक-आर्थिक परिस्थितियों में उसकी जड़ें कितनी भी गहरी क्यों न हों। " (वही, पृष्ठ-27)

इसी बात को लेनिन इस तरह कहते हैं :

" ... ... मार्क्स की प्रतिभा इस बात में निहित है कि उन्होंने उन प्रश्नों के उत्तर उपलब्ध किये, जिन्हें मानव जाति के प्रमुखतम विचारक पहले ही उठा चुके थे। दर्शनशास्त्र, राजनीतिक अर्थशास्त्र तथा समाजवाद के महानतम प्रतिनिधियों की शिक्षाओं के प्रत्यक्ष सीधे क्रम के रूप में ही उनकी शिक्षा का जन्म हुआ।

" ... ... 19वीं सदी में जर्मन दर्शनशास्त्र, आंग्ल राजनीतिक अर्थशास्त्र तथा फ्रांसीसी समाजवाद के रूप में मानवजाति ने जो भी सर्वश्रेष्ठ निर्मित किया है, मार्क्सवाद उनका ही कानूनी उत्तराधिकारी है।"(लेनिन, मार्क्सवाद के तीन स्रोत तथा तीन संघटक तत्व, संकलित रचनाएं, चार खण्डों में, प्रगति प्रकाशन, मास्को, 1988, खण्ड-1, पृष्ठ,17-18)

इस तरह मजदूर वर्ग की विचारधारा उसके भीतर सीधे पूंजीपति वर्ग तथा मजदूर वर्ग के बीच चलने वाले वर्ग-संघर्ष से पैदा नहीं हो जाती। एक विचारधारा के रूप में यह विचारों के क्रम के रूप में सामने आती है और पहले से मौजूद विचारों को यह प्रस्थान बिन्दु के तौर पर लेती है। सभी विचारों की तरह मजदूर वर्ग की विचारधारा की जड़ें भी वस्तुगत यथार्थ में होती हैं पर इसका विकास

विचारों के बीच चलने वाले संघर्षों के क्रम में होता है। इसीलिए जब कोई मजदूर भी इस विचारधारा के विकास में भाग लेता है तो वह यह एक मजदूर की तरह नहीं बल्कि एक सिद्धान्तकार की तरह इसमें भाग लेता है।

जैसा कि पहले हिस्से से स्पष्ट है, मजदूर वर्ग अथवा सर्वहारा वर्ग ठीक इसी कारण पूंजीपति वर्ग का निजाम समाप्त कर, निजी सम्पत्ति का उन्मूलन कर समाज को कम्युनिज्म की ओर ले जायेगा क्योंकि वह सर्वहारा है। वह पूंजीवादी समाज का सबसे निचला वर्ग है, निजी सम्पत्ति से वंचित है और हर तरह से सर्वहारा बन कर ही वह इस लायक बनता है कि समूचे समाज को फिर से हासिल कर सके, कम्युनिस्ट समाज की ओर पूरे समाज को ले जा सके। यह सर्वहारा पूंजीवादी समाज में ज्ञान-विज्ञान से वंचित होता है और पूंजी का विकास उसे निरंतर अकुशल श्रम की ओर ढकेलता रहता है। एक ओर पूंजीवादी समाज में ज्ञान-विज्ञान का, खुद पूंजी की जरूरतों की खातिर, खूब विकास होता चला जाता है, दूसरी ओर सर्वहारा इससे वंचित किया जाता है। ऐसे में ज्ञान-विज्ञान से वंचित यह सर्वहारा वर्ग अपनी मुक्ति की चेतना, अपनी मुक्ति की विचारधारा कैसे हासिल करता है जो मानव इतिहास के समग्र विकास से संचित ज्ञान-विज्ञान के वैज्ञानिक समाहार के द्वारा ही संभव है? इसका उत्तर मार्क्सवाद यह देता है कि मजदूर वर्ग की मुक्ति की यह विचारधारा मजदूर वर्ग के आंदोलन में बाहर से लाई जाती है और इस विचारधारा का विकास पहले पहल वे सिद्धान्तकार करते हैं जो ज्ञान-विज्ञान से लैस होते हैं (पूंजीवादी समाज में बुर्जुआ और पेटी बुर्जुआ बुद्धिजीवियों के लिए यह संभावना ज्यादा है हालांकि अपने को बुद्धिजीवियों के स्तर तक उठा चुके कतिपय मजदूर भी ऐसा कर पाने में सक्षम हो जाते हैं।)

यह ऐतिहासिक तथ्य है कि मजदूर वर्ग की विचारधारा, वैज्ञानिक समाजवाद अथवा मार्क्सवाद का जन्म मजदूर आंदोलन से बाहर, हालांकि उसके साथ नजदीकी संबंध रखते हुए हुआ। इसे कार्ल मार्क्स और फ्रेडरिक एंगेल्स नामक दो बुद्धिजीवियों ने प्रतिपादित किया जो अपनी वर्गीय पृष्ठभूमि में क्रमशः पेटी बुर्जुआ और बुर्जुआ थे।यह भी लाक्षणिक है कि मार्क्स-एंगेल्स की शुरुआती कृतियां (1844 की आर्थिक-दार्शनिक पाण्डुलिपियां, पवित्र परिवार, जर्मन विचारधारा, दर्शन की दरिद्रता इत्यादि) ज्यादातर दार्शनिक हैं और ये दोनों अपनी युवावस्था के शुरूआती दौर में दो दार्शनिकों - हेगेल तथा फायरबाख - के अनुयायी रहे। वस्तुतः इन दोनों दार्शनिकों तथा उनके अनुयायी अपने समकालीन दार्शनिकों से हिसाब किताब चुकता करते हुए ही मार्क्स-एंगेल्स वैज्ञानिक समाजवाद की विचारधारा तक पहुंचे। इस दौरान इंग्लैण्ड, जर्मनी व फ्रांस के कम्युनिस्ट आंदोलन, समाजवादी आंदोलन तथा मजदूर आंदोलन से उनका नजदीकी संबंध रहा। वस्तुतः वैज्ञानिक समाजवाद की पूर्ण परिपक्व तथा समग्र कृति 'कम्युनिस्ट पार्टी का घोषणापत्र' एक अंतर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट संगठन की ओर से ही प्रकाशित की गयी थी। उस समय का क्रांतिकारी मजदूर आंदोलन अपने भीतर से केवल काल्पनिक कम्युनिज्म ही पैदा कर पाया था। इंग्लैण्ड का व्यापक मजदूर आंदोलन, चार्टिस्ट आंदोलन तो इससे भी बहुत नीचे रहा। हां, यह तथ्य है कि एक मजदूर, जोसेफ डियेटजन, स्वतंत्र रूप से द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद के मूल निष्कर्षों तक पहुंच गये थे। लेकिन मार्क्स-एंगेल्स के समग्र विचारों की उनसे कोई तुलना नहीं है।

मजदूर वर्ग और उसकी विचारधारा (इस लेख के पहले हिस्से में मार्क्स-एंगेल्स की जो बातें प्रस्तुत की गयी हैं वे इस विचारधार की अहम् बातें हैं) के संबंध में काउत्स्की का वह उद्धरण भी यहां देना समीचीन होगा जिसे लेनिन ने अपनी पुस्तक 'क्या करें?' में दिया था। वह इस प्रकार है :

> " हमारे बहुत से संशोधनवादी आलोचकों का विश्वास है कि मार्क्स ने यह कहा था कि आर्थिक विकास तथा वर्ग-संघर्ष न केवल समाजवाद की परिस्थितियों को ही पैदा कर देते हैं, बल्कि वे प्रत्यक्षतः उसकी आवश्यकता की ***चेतना*** (शब्दों पर जोर काउत्स्की ने दिया है) को भी उत्पन्न कर देते हैं। और ये आलोचक जोर देकर कहते हैं कि इग्लैण्ड याने पूंजीवादी दृष्टि से सबसे विकसित देश इस चेतना से दूसरे तमाम देशों की अपेक्षा दूर है। यदि कोई मसौदे के आधार पर अपनी राय कायम करे, तो उसे लगेगा कि जिस समिति ने आस्ट्रियाई पार्टी कार्यक्रम तैयार किया है, वह भी इस तथाकथित कट्टर मार्क्सवादी मत को मानती है, जिसका ऊपर खंडन किया गया है। कार्यक्रम के मसौदे में कहा गया है : 'पूंजीवादी विकास से सर्वहारा वर्ग की संख्या में जितनी बढ़ती होती जाती है, उतना ही अधिक वह पूंजीवाद से लड़ने के लिए बाध्य और समर्थ होता चला जाता है।सर्वहारा वर्ग में यह चेतना पैदा हो जाती है' कि समाजवाद संभव और आवश्यक है। यहां ऐसा मालूम होता है, मानो समाजवादी चेतना सर्वहारा वर्ग के वर्ग संघर्ष का आवश्यक और प्रत्यक्ष परिणाम है। पर यह बिलकुल झूठी बात है।निस्संदेह, एक सिद्धान्त के रूप में समाजवाद की जड़ें सर्वहारा के वर्ग संघर्ष की जड़ों की भांति आधुनिक आर्थिक संबंधों में हैं और सर्वहारा के वर्ग संघर्ष की तरह समाजवाद पूंजीवाद द्वारा पैदा की गयी जनता की गरीबी और बदहाली के खिलाफ चलने वाले संघर्ष से उत्पन्न होता है। परन्तु समाजवाद और वर्ग संघर्ष साथ-साथ ही उभरते हैं और एक दूसरे में से नहीं निकलते, दोनों भिन्न-भिन्न परिस्थितियों में से उत्पन्न होते हैं। आधुनिक समाजवादी चेतना केवल गहन वैज्ञानिक ज्ञान के आधार पर ही उत्पन्न हो सकती है। सच तो यह है कि समाजवादी उत्पादन के लिए आधुनिक आर्थिक विज्ञान उतना ही जरूरी है, जितनी कि आधुनिक प्रौद्योगिकी, और सर्वहारा वर्ग के लाख चाहने पर भी इन दोनों चीजों में से कोई भी पैदा नहीं कर सकता; दोनों ही आधुनिक सामाजिक प्रक्रिया से पैदा होते हैं। विज्ञान का वाहक सर्वहारा वर्ग नहीं, बल्कि ***बुर्जुआ बुद्धिजीवी*** है (शब्दों पर जोर काउत्सकी का है) आधुनिक समाजवाद ने सबसे पहले इसी स्तर के चन्द व्यक्तियों के दिमागों में जन्म लिया था और इन लोगों

ने ही बौद्धिक दृष्टि से अधिक विकसित कुछ मजदूरों को इससे परिचित कराया था, और जहां कहीं परिस्थितियां इस बात की इजाजत देती हैं, वहां ये मजदूर समाजवाद को सर्वहारा के वर्ग संघर्ष में शामिल कर देते हैं। इस प्रकार समाजवादी चेतना एक ऐसी चीज है, जो सर्वहारा के वर्ग संघर्ष में बाहर से लायी जाती है और वह कोई ऐसी चीज नहीं है, जो इस संघर्ष के अंदर से स्वयंस्फूर्त रूप से पैदा हो जाती हो।अतएव पुराने हाइनफेल्ड कार्यक्रम में बिलकुल ठीक कहा गया है कि सामाजिक जनवाद का कर्तव्य यह है कि सर्वहारा के अंदर वह उसकी अपनी स्थिति की ***चेतना*** तथा उसके कर्तव्य की चेतना ला दे (शब्दशः सर्वहारा को भर दे)। यदि वर्ग संघर्ष से यह चेतना अपने आप पैदा हो जाया करती, तो उसकी कोई जरूरत न थी। नये मसौदे ने पुराने कार्यक्रम की यह प्रस्थापना नकल कर ली थी और उसे उपरोक्त प्रस्थापना के साथ जोड़ दिया। लेकिन इससे विचारों का क्रम बिलकुल भिन्न हो गया ... ... " (लेनिन द्वारा उद्धृत, क्या करें?, प्रगति प्रकाशन, मास्को, 1990, पृष्ठ-56-57)

इसी उद्धरण के सम्बन्ध में लेनिन एक टिप्पणी में यह जोड़ते हैं:

"बेशक इसका मतलब यह नहीं है कि इस प्रकार की विचारधारा पैदा करने में मजदूर कोई भाग नहीं लेते।पर वे उसमें मजदूरों की हैसियत से नहीं, बल्कि समाजवादी सिद्धान्तकारों की हैसियत से, प्रूदों और वाइटलिंग जैसे लोगों की हैसियत से भाग लेते हैं। दूसरे शब्दों में, विचारधारा को उत्पन्न करने में मजदूर केवल उसी समय और उसी हद तक भाग लेते हैं, जिस समय और जिस हद तक वे अपने युग के ज्ञान पर न्यूनाधिक रूप में अधिकार प्राप्त करने तथा उस ज्ञान को और विकसित करने में समर्थ होते हैं। ... ... " (वही, पृष्ठ-58)

मजदूर वर्ग स्वयं अपनी विचारधारा तक नहीं पहुंच सकता क्योंकि एक वर्ग के बतौर वह उस ज्ञान-विज्ञान से वंचित होता है जो इस विचारधारा को पैदा करने के लिए जरूरी होता है।यह पूंजीवादी समाज की संरचना, उसके श्रम विभाजन और उसमें मजदूर वर्ग की स्थिति में ही अंतर्निहित है। यदि कोई मजदूर इस विचारधारा तक पहुंचता है तो स्वयं को इस स्थिति से मुक्त करके ही, व्यक्तिगत तौर पर आधुनिक ज्ञान-विज्ञान पर अधिकार हासिल करके ही। स्वभावतः इक्का-दुक्का मजदूर ही ऐसा कर सकते हैं, समूचा मजदूर वर्ग नहीं। बेशक जो मजदूर ऐसा कर पाते हैं वे मजदूर वर्ग के सिद्धान्तकार बन जाते हैं।

चूंकि मजदूर वर्ग का ट्रेड यूनियन आंदोलन श्रम शक्ति की बिक्री की शर्तों के लिए पूंजीपति वर्ग से संघर्ष होता है इसलिए यह पूंजीवादी समाज की सीमाओं में बंधा होता है। इसी कारण यह संघर्ष कभी मजदूर वर्ग को उसकी विचारधारा तक नहीं पहुंचा सकता। यही बात पूंजीवादी व्यवस्था के भीतर मजदूरों के राजनीतिक सुधार के आंदोलनों के बारे में भी सच है (मसलन, सार्विक मताधिकार हासिल करने के लिए आंदोलन)।

सभी वर्गीय समाजों की तरह पूंजीवाद में भी शासक वर्ग के विचार ही शासक विचार होते हैं। पूंजीवाद में मजदूर वर्ग भी पूंजीवादी विचारों से ग्रस्त होता है। इसीलिए वह स्वतःस्फूर्त तरीके से इससे मुक्त नहीं हो सकता। लेनिन कहते हैं:

"पाठक प्रश्न करेंगे कि आखिर स्वयंस्फूर्त आंदोलन का, कम से कम विरोध के मार्ग पर विकसित होने वाले आंदोलन का, यह परिणाम क्यों होता है कि बुर्जुआ विचारधारा का प्रभुत्व हो जाता है? इसका कारण केवल यह है कि उत्पत्ति की दृष्टि से बुर्जुआ विचारधारा समाजवादी विचारधारा से बहुत पुरानी है, वह अधिक विकसित है और उसे फैलने की ***कहीं*** अधिक सुविधाएं मिली हुयी हैं। ... ... (लेनिन, क्या करें?,पृष्ठ- 60, जोर मूल में)

इसी की एक पाद टिप्पणी में लेनिन यह लिखते हैं :

" ... ... मजदूर वर्ग स्वयंस्फूर्त ढंग से समाजवाद की ओर खिंचता है, परन्तु फिर भी अधिक व्यापक रूप से फैली हुयी बुर्जुआ विचारधारा (जो नाना रूपों में लगातार पुनर्जीवित की जाती रहती है) स्वयंस्फूर्त ढंग से अपने को मजदूर वर्ग के ऊपर और भी ज्यादा मात्रा में लादती रहती है।"

स्पष्ट है कि यदि कोई मजदूर एक सिद्धान्तकार की हैसियत से मजदूर वर्ग की विचारधारा तक पहुंच भी जाता है तो भी इस विचारधारा को मजदूर आंदोलन में, सर्वहारा के वर्ग-संघर्ष में ले जाना बाकी रहता है। सर्वहारा का वर्ग संघर्ष कभी भी अपने आप सर्वहाराओं में समाजवादी विचारधारा नहीं पैदा कर देगा। इसे मजदूर आंदोलन में बाहर से ही ले जाना होगा चाहे इसे पैदा करने का काम बुर्जुआ-पेटी बुर्जुआ बुद्धिजीवियों ने किया हो या सिद्धान्तकारों की तरह काम करने वाले मजदूरों ने। काल्पनिक कम्युनिज्म के सिद्धान्तों तक पहुंचने के बाद वाइटलिंग और उनके चन्द अनुयाइयों ने इसे मजदूर वर्ग में फैलाने का प्रयास किया था ठीक उसी तरह जैसे मार्क्स एंगेल्स के वैज्ञानिक समाजवाद के विचारों को मजदूर वर्ग में ले जाने का काम विल्हेल्म लीब्कनेख्त और बेबेल इत्यादि ने किया। जब इन पर चलने वालों का समूह पैदा हो जाता है (मजदूर वर्ग की पार्टी का भ्रूण) तथा अंत में जब मजदूर वर्ग की पार्टी पैदा हो जाती है तब भी यही होता है लेकिन अब ज्यादा व्यापक पैमाने पर और ज्यादा प्रभावी ढंग से। मजदूर वर्ग का 'अपने आप में वर्ग' से 'अपने लिए वर्ग' में रूपान्तरण अपने-आप वर्ग संघर्ष के जरिये नहीं हो जाता। इसके लिए उसमें बाहर से मजदूर वर्ग की विचारधारा ले जाने की जरूरत होती है। ठीक इसी कारण इस विचारधारा के वाहक तथा उनको लेकर संगठित मजदूर वर्ग की पार्टी उसकी मुक्ति के संघर्ष के लिए अहम् तथा अनिवार्य हो जाते हैं।

वैज्ञानिक समाजवाद अथवा कम्युनिज्म और कुछ नहीं इसी मजदूर वर्ग की विचारधारा है तथा कम्युनिस्ट इस विचारधारा के वाहक और इसके लिए संघर्ष करने वाले। इसीलिए सर्वहारा वर्ग के संबंध में कम्युनिस्टों की भूमिका का वर्णन ***कम्युनिस्ट पार्टी का घोषणा पत्र*** इस तरह करता है :

" समग्र रूप से सर्वहारा वर्ग के साथ कम्युनिस्टों का क्या सम्बन्ध है?

" कम्युनिस्ट मजदूर वर्ग की दूसरी पार्टियों के मुकाबले अपनी कोई पार्टी नहीं बनाते।

" समग्र रूप में सर्वहारा वर्ग के हितों के अलावा और उनसे पृथक उनका कोई हित नहीं है।

" वे सर्वहारा आंदोलन को किसी खास नमूने पर ढालने या उसे विशेष रूप प्रदान करने के लिए अपना कोई संकीर्णतावादी सिद्धान्त नहीं स्थापित करते।

" कम्युनिस्टों और दूसरी मजदूर पार्टियों में सिर्फ यह अंतर है कि: (1) विभिन्न देशों के सर्वहाराओं के राष्ट्रीय संघर्षों में राष्ट्रीयता के तमाम भेदभाव को छोड़कर वे पूरे सर्वहारा वर्ग के सामान्य हितों की ओर इशारा करते हैं और उन्हें सामने लाते हैं; (2) पूंजीपति वर्ग के खिलाफ सर्वहारा वर्ग का संघर्ष जिन विभिन्न मंजिलों से गुजरता हुआ आगे बढ़ता है उनमें हमेशा तथा हर जगह वे समग्र आंदोलन के हितों का प्रतिनिधित्व करते हैं।

"अत: एक ओर व्यावहारिक दृष्टि से कम्युनिस्ट हर देश की मजदूर पार्टियों के सबसे उन्नत और कृतसंकल्प जुज होते हैं, ऐसे जुज जो औरों को आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करते हैं, दूसरी ओर, सैद्धान्तिक दृष्टि से, सर्वहारा वर्ग के विशाल जन-समुदाय की अपेक्षा इस अर्थ में श्रेष्ठ हैं कि वे सर्वहारा आंदोलन के आगे बढ़ने के रास्ते की, उसके हालात और साधारणत: उसके अंतिम नतीजे की सुस्पष्ट समझ रखते हैं।

" कम्युनिस्टों का तात्कालिक ध्येय वही है जो दूसरी मजदूर पार्टियों का है-यानी सर्वहारा वर्ग को एक वर्ग के रूप में संगठित करना, पूंजीवादी प्रभुत्व का तख्ता उलटना और राजनीतिक सत्ता पर सर्वहारा वर्ग का अधिकार कायम करना।"(वही, पृष्ठ- 144-145)

उपरोक्त से स्पष्ट है कि कम्युनिस्टों से स्वतंत्र और उनके बिना भी मजदूर वर्ग वर्ग संघर्ष की प्रक्रिया में स्वयं को एक मजदूर पार्टी में संगठित कर सकता है और यहां तक कि सत्ता पर कब्जा करने का लक्ष्य भी रख सकता है। लेकिन इस सबके बावजूद न तो ऐसी पार्टी कम्युनिस्ट पार्टी हो जाती है और न ही उसमें संगठित मजदूर कम्युनिस्ट। ऐसी पार्टी अभी भी मजदूर वर्ग की विचारधारा, वैज्ञानिक समाजवाद अथवा कम्युनिज्म से दूर रहती है। उसमें मजदूर वर्ग की विचारधारा ले जाने का काम बाकी रहता है जो केवल इस विचारधारा से लैस यानी कम्युनिस्ट ही कर सकते हैं। इस विचारधारा के बिना सत्ताधारी मजदूर वर्ग का क्या हश्र होगा यह हम भूतपूर्व समाजवादी देशों के दुखद अनुभव से जानते हैं जब कम्युनिस्ट पार्टियों के संशोधनवादी रास्ते पर चल पड़ने के बाद मजदूर वर्ग भी उनके पीछे पूंजीवादी पुनर्स्थापना की ओर बढ़ता गया। केवल पूंजीवादी पुनर्स्थापना के भयंकर परिणामों ने ही उसे वस्तु स्थिति का अहसास कराया।

कम्युनिस्ट घोषणा पत्र के उपरोक्त उद्धरण में कम्युनिस्टों की उस भूमिका का वर्णन है जो अन्य मजदूर पार्टियों की मौजूदगी में उन्हें निभानी होती है। लेकिन जब ऐसी मजदूर पार्टी अस्तित्वमान न हो तो उन्हें एक मजदूर पार्टी गठित करनी होती है। इन दोनों ही परिस्थितियों में उनके कार्य का अंतर्य एक ही होता है: मजदूर आंदोलन में मजदूर वर्ग की विचारधारा को ले जाना, वैज्ञानिक समाजवाद अथवा कम्युनिज्म को ले जाना। यदि कोई मजदूर पार्टी मौजूद होती है तो वे उसे इस विचारधारा पर खड़ा करने की कोशिश करते हैं। यदि कोई मजदूर पार्टी मौजूद नहीं होती है तो स्वयं इस विचारधारा पर खड़ी एक पार्टी का निर्माण करते हैं। यदि कम्युनिस्ट ये सब नहीं करते हैं तो वे कुछ भी नहीं कर रहे होते हैं। वे वर्ग-संघर्ष में मजदूर वर्ग को बुर्जुआ विचारधारा के दायरे में छोड़ देते हैं।

एंगेल्स ने 1875 में जर्मनी की सामाजिक जनवादी पार्टी के संबंध में यह कहा था (मजदूर आंदोलन के संघर्ष के तीनों पहलुओं - सैद्धन्तिक, राजनीतिक तथा आर्थिक-व्यावहारिक [पूंजीपतियों के प्रति प्रतिरोध] का जिक्र करने के बाद):

" ... ... विशेष रूप से नेताओं का यह कर्तव्य होगा कि वे सभी सैद्धन्तिक प्रश्नों की निरंतर स्पष्टतर समझ हासिल करें, पुराने विश्व दृष्टिकोण से उत्तराधिकार के रूप में प्राप्त परंपरागत शब्दजाल के प्रभाव से अपने को अधिकाधिक मुक्त करें और इस बात का बराबर ध्यान रखें कि चूंकि समाजवाद एक विज्ञान बन गया है इसलिए वह यह अपेक्षा करता है कि उसका विज्ञान के रूप में अनुशीलन किया जाय, अर्थात यह कि उसका अध्ययन किया जाये। इस प्रकार से प्राप्त अधिकाधिक स्पष्ट होती जाती हुई समझ को आम मजदूरों के बीच और अधिक उत्साह के साथ फैलाना और पार्टी तथा ट्रेड यूनियन, दोनों के ही संगठन को अधिकाधिक दृढ़ रूप से संहत करना-यह होगा हमारा काम। ... ..." (फ्रेडरिक एंगेल्स, 'जर्मनी में किसान युद्ध' की भूमिका, वही, खण्ड-2, भाग-1, पृष्ठ-227-228)

इन्हीं बातों को लेनिन ने 'क्या करें?' में भांति-भांति से बार-बार रेखांकित किया है :

" ... ... जो कोई भी मजदूर आंदोलन की स्वयंस्फूर्ति की पूजा करता है, जो कोई भी 'सचेतन तत्व' की भूमिका को, सामाजिक जनवाद की भूमिका को कम करके आंकता है, ***वह चाहे ऐसा करना चाहता हो या न चाहता हो, पर असल में वह मजदूरों पर बुर्जुआ विचारधारा के असर को मजबूत करता है।...*** " (वही, पृष्ठ -56, जोर मूल में)

"चूंकि स्वतंत्र, खुद आम मजदूरों द्वारा अपने आंदोलन की प्रक्रिया के दौरान विकसित विचारधारा का कोई सवाल ही पैदा नहीं होता, इसलिए ***केवल ये रास्ते ही*** बच जाते हैं : या तो बुर्जुआ विचारधारा को चुना जाये या समाजवादी विचारधारा को।... ... अतएव समाजवादी विचारधारा के महत्व को ***किसी भी*** तरह कम करके आंकने, उससे ***जरा भी मुंह मोड़ने*** का मतलब बुर्जुआ विचारधारा को मजबूत करना होता है।स्वयं स्फूर्ति की बहुत चर्चा हो रही है, पर मजदूर आंदोलन के ***स्वयंस्फूर्त*** विकास का परिणाम यह होता है कि यह आंदोलन बुर्जुआ विचारधारा के अधीन हो जाता है ...क्योंकि स्वयंस्फूर्त मजदूर आंदोलन ट्रेड-यूनियनवाद होता है ... ... और ट्रेड यूनियनवाद का मतलब मजदूरों को विचारधारा के मामले में बुर्जुआ वर्ग का दास बना कर रखना होता है। ... ... इसलिए हमारा कार्यभार सामाजिक जनवादियों का कार्यभार है ***स्वयंस्फूर्ति के खिलाफ लड़ना,*** मजदूर वर्ग के आंदोलन के उस स्वयंस्फूर्त, ट्रेड-यूनियनवादी रुझान को, जो उसे बुर्जुआ वर्ग के साये में ले जाता है, ***मोड़ना*** और उसे क्रांतिकारी-सामाजिक जनवाद के साये में लाना। ... ..." (वही, पृष्ठ-57.59, जोर मूल में)

" ... ... जन आंदोलन की स्वयंस्फूर्ति की किसी भी तरह पूजा करने और सामाजिक जनवादी राजनीति का ***किसी भी तरह*** दरजा घटा कर ट्रेड-यूनियनवादी राजनीति के स्तर पर ले आने का मतलब मजदूर आंदोलन को बुर्जुआ जनवाद का साधन बना देने के लिए जमीन तैयार करने के सिवा कुछ नहीं है। स्वयंस्फूर्त मजदूर आंदोलन अपने से केवल ट्रेड-यूनियनवाद ही उत्पन्न कर सकता है (लाजिमी तौर पर उत्पन्न करता है) और मजदूर वर्ग की ट्रेड-यूनियनवादी राजनीति केवल इसी बात से सामाजिक जनवादी राजनीति नहीं बनती कि वह राजनीतिक संघर्ष में, यहां तक कि राजनीतिक क्रांति में भाग ले रहा है।... ..." (वही, पृष्ठ-127, जोर मूल में)

III
मजदूर वर्ग और उसकी पार्टी

मजदूर वर्ग तक उसकी विचारधारा को ले जाने, उसे उसकी विचारधारा से लैस करने तथा वर्ग संघर्ष में उसका नेतृत्व करने का काम उसकी पार्टी, कम्युनिस्ट पार्टी करती है। इस पार्टी के महत्व को लेनिन के ये शब्द प्रदर्शित करते हैं जो उन्होंने रूसी क्रांति के संदर्भ में कहे थे:

" ... ... हम इतिहास के एक ऐसे क्षण में नौसिखुए साबित हो रहे हैं, जबकि हम एक प्रसिद्ध उक्ति को बदलकर यह कह सकते थे : "हमें क्रांतिकारियों का एक संगठन दे दो और हम पूरे रूस को उलट देंगे!" (वही,पृष्ठ-165)

मार्क्स-एंगेल्स द्वारा प्रतिपादित वैज्ञानिक समाजवाद की विचारधारा तथा किसी हद तक उनके निर्देशन में यूरोप के विभिन्न देशों में मजदूर पार्टियों का गठन तथा विकास शुरू हुआ। उन्नीसवीं सदी की अंतिम चौथाई में इसमें बड़ी प्रगति हुयी तथा शताब्दी का अंत होते-होते कई देशों में बड़ी पार्टियां अस्तित्व में आ गयीं।लेकिन इसी के साथ यह पाया गया कि वे अधिकाधिक सुधारवाद से ग्रस्त होती गयीं। एंगेल्स ने अपने अंतिम वर्षों में इस सुधारवाद के खिलाफ तीखा संघर्ष चलाया तथा उनके जिन्दा रहते यह काबू में भी रहा। पर उनके देहान्त के बाद यह सुधारवाद खुल्लमखुल्ला मैदान में आ गया। उसने अपने अनुरूप विचारधारा हासिल करने के लिए मार्क्सवाद में संशोधन का नारा उछाला तथा इस तरह बदनाम संशोधनवाद अस्तित्व में आया। बर्नस्टीन जैसे लोग इसके नेता थे। काउत्स्की जैसे 'रूढ़िवादी' मार्क्सवादियों ने इस संशोधनवाद के खिलाफ संघर्ष चलाया फिर भी सारे शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व का नमूना पेश करते हुए एक ही पार्टी में बने रहे। अंततः प्रथम विश्व युद्ध के फूटने के साथ इन मजदूर पार्टियों का पूर्ण दीवालियापन सामने आ गया।

इस बीच रूस में लेनिन अपने सारे विरोधियों से तीखा संघर्ष चलाते हुए एक क्रांतिकारी मजदूर पार्टी का निर्माण कर रहे थे। तब उनके विचारों का रोजा लक्जमबर्ग सरीखे क्रांतिकारियों ने भी विरोध किया था।आरंभ में ऐसा लग रहा था कि लेनिन की पार्टी की अवधारणा रूस की जारशाही की विशिष्ट परिस्थितियों का परिणाम है।पर दूसरे इंटरनेशनल की पार्टियों के हश्र, प्रथम विश्व युद्ध के अंत में जर्मनी इत्यादि देशों में क्रांतियों के हश्र तथा स्वयं सफल रूसी क्रांति के परिणाम ने यह स्थापित किया कि पार्टी की लेनिनवादी धारणा ही वास्तव में कम्युनिस्ट पार्टी की सही अवधारणा है। तब से सभी कम्युनिस्ट क्रांतिकारियों के लिए यह अवधारणा पार्टी की मार्क्सवादी-लेनिनवादी अवधारणा बन गयी।

दूसरे इंटरनेशनल की पार्टियों के चरित्र का वर्णन करते हुए तथा उसके बरक्स लेनिनवादी पार्टी की अवधारणा प्रस्तुत करते हुए स्तालिन यह कहते हैं :

"क्रांति के पूर्वकालीन, न्यूनाधिक शांतिपूर्ण विकास वाले युग में मजदूर आंदोलन में दूसरे इंटरनेशनल की पार्टियों का बोलबाला था और पार्लियामेन्ट वाले ढंग ही उस समय संघर्ष के प्रधान साधन माने जाते थे। ऐसी अवस्था में पार्टी का न तो वह महत्व था और न हो सकता था जो उसने आगे चलकर खुले क्रांतिकारी संघर्षों के युग में ग्रहण किया। दूसरे इंटरनेशनल पर किये गये आक्षेपों का उत्तर देते हुए काउत्स्की ने कहा है कि उक्त इंटरनेशनल की पार्टियां युद्ध का नहीं बल्कि शांति का अस्त्र थीं। इसलिए युद्ध के काल में, अर्थात सर्वहारा वर्ग के क्रांतिकारी संघर्ष के काल में, उनकी कोई महत्वपूर्ण भूमिका न हो सकी। काउत्स्की का कहना सही है। किंतु उसका तात्पर्य क्या है? वह यह है कि दूसरे इंटरनेशनल से संबंधित पार्टियां सर्वहारा वर्ग के

क्रांतिकारी आंदोलन को चलाने के सर्वथा अयोग्य थीं। वे मजदूर वर्ग की लड़ाकू पार्टियां न थीं जो राजसत्ता पर अधिकार करने के संघर्ष में सर्वहारा वर्ग का नेतृत्व करतीं। बल्कि वे संसदीय चुनावों की और संसदवादी संघर्षों की लड़ाई लड़ने वाली केवल चुनावी समितियां थीं। ... ...

"किंतु नये युग के साथ ही परिस्थिति में भारी परिवर्तन हो गया है।नया युग खुले वर्ग संघर्षों का युग है, यह सर्वहारा वर्ग के क्रांतिकारी संघर्षों का और सर्वहारा क्रांति का युग है; यह एक ऐसा युग है जिसमें साम्राज्यवाद का उच्छेद करने के लिए तथा राजसत्ता पर सर्वहारा वर्ग का आधिपत्य स्थापित करने के लिए सेना को खुलेआम संगठित किया जा रहा है। इस युग में सर्वहारा वर्ग को सर्वथा नये काम करने हैं। ... ...

"इसलिए आवश्यकता पड़ी एक नयी पार्टी की, एक लड़ने वाली और क्रांतिकारी पार्टी की, एक ऐसी पार्टी की जो राज सत्ता पर अधिकार करने के संघर्ष में सर्वहारा वर्ग का नेतृत्व कर सके, एक ऐसी अनुभवी पार्टी की जो क्रांतिकारी परिस्थिति की अत्यंत जटिल अवस्थाओं में भी अपना विवेक न खोये, एक ऐसी कार्यकुशल पार्टी की जो क्रांति के जहाज को पानी के अन्दर छुपी हुयी चट्टानों से बचाकर उसको अपने लक्ष्य तक पहुंचा दे।

"इस तरह की पार्टी के बिना साम्राज्यवाद का अंत करने और सर्वहारा वर्ग की तानाशाही की स्थापना करने की बात सोचना भी व्यर्थ होता।

"यह नयी पार्टी है लेनिनवाद की पार्टी।" (स्तालिन, लेनिनवाद के मूलभूत सिद्धान्त, समकालीन प्रकाशन, पटना, 2002, पृष्ठ-85-86)

एक अन्य कोण से भी स्तालिन ने दूसरे इंटरनेशनल की पार्टियों का अवसरवादी चरित्र उद्घाटित किया। राजनीतिक-सैद्धान्तिक तौर पर यह और भी मूलगामी था। स्तालिन कहते हैं :

" स्वतः स्फूर्तता की उपासना का सिद्धान्त स्वतः स्फूर्त आंदोलनों को राजनीतिक रूप से संगठित करने का विरोधी है। वह इस बात का विरोधी है कि पार्टी मजदूर वर्ग का अगुवा बन कर उसके आगे-आगे चले, जनता को वर्ग चेतना के धरातल पर लाए और उसके आंदोलन का नेतृत्व करे। वह इस विचार का समर्थक है कि मजदूर वर्ग के वर्ग सचेत लोग अपने आंदोलन को अपने आप बढ़ने दें, पार्टी उसके विकास में दखल न दे, बल्कि स्वयं उसकी पिछलग्गू बन कर चले। इस प्रकार स्वतःस्फूर्तता का सिद्धान्त मजदूर आंदोलन में वर्ग सचेत लोगों की भूमिका को हीन ठहराने का सिद्धान्त है; यह पिछलग्गूपन (खोस्तिज्म-पुच्छवाद) की विचारधारा है और इस तरह हर प्रकार की अवसरवादिता का स्वाभाविक आधार है।

... ...

"स्वतःस्फूर्तता की उपासना का यह सिद्धान्त रूस की ही विशेषता नहीं है। यह अत्यन्त व्यापक है और दूसरे इंटरनेशनल की तमाम पार्टियों में निरपवाद रूप से फैला हुआ है।... ..." (वही, पृष्ठ-24)

सुधारवाद के आम प्रभाव के अलावा रूस में मजदूर वर्ग द्वारा सत्ता पर कब्जा किये जाने के काउत्स्की जैसे लोगों द्वारा विरोध का कारण इसी में निहित है। वे विश्व ऐतिहासिक तौर पर मजदूर वर्ग की पार्टी द्वारा मजदूर वर्ग का नेतृत्व किये जाने के विरुद्ध थे। उनके अनुसार समाज विकास की सामान्य प्रक्रिया के फलस्वरूप हर स्तर से परिपक्व होकर ही सर्वहारा को सत्ता में आना चाहिए।क्रांति को सुदूर भविष्य तक के लिए टाल दिया जाना चाहिए और मजदूर वर्ग द्वारा सत्ता पर कब्जा करने का अवसर मिलने पर भी या यहां तक कि इसके अलावा कोई अन्य रास्ता न होने पर भी मजदूर वर्ग को समय से पूर्व सत्ता अपने हाथ में नहीं लेनी चाहिए। यह अनर्थकारी होगा। मजदूर वर्ग का आम विकास आगे-आगे चलेगा तथा पार्टी इसके पीछे-पीछे चलेगी। उनके अनुसार मार्क्स-एंगेल्स के ऐतिहासिक भौतिकवाद का यही निष्कर्ष था। जहां रूस के पुछल्लावादी तत्कालीन मजदूर आंदोलन के संघर्ष के संबंध में पुछल्लावादी थे वहीं दूसरे इंटरनेशनल की पार्टियां विश्व-ऐतिहासिक संदर्भ में पुछल्लावादी थीं। इसमें रूसी मेंशेविक भी शामिल थे।

विश्व-ऐतिहासिक संदर्भ में स्तालिन ने दूसरे इंटरनेशनल के पुछल्लावादी मतवाद के दो उदाहरण दिये थे:

"पहला मतवाद सर्वहारा वर्ग द्वारा राजसत्ता पर अधिकार करने की उपयुक्त परिस्थितियों के संबंध में है। अवसरवादी बहुत जोर देकर कहते हैं कि सर्वहारा तब तक राजसत्ता पर अधिकार नहीं कर सकता और उसे करना भी नहीं चाहिए-जब तक कि अपने देश में उसका बहुमत नहीं हो जाता। इस ऊटपटांग धारणा के पक्ष में सैद्धान्तिक या व्यावहारिक किसी भी तरह के प्रमाण नहीं दिये जाते क्योंकि वास्तव में ऐसा कोई प्रमाण है भी नहीं।लेनिन कहते हैं: अच्छा, थोड़ी देर के लिए अवसरवादियों की बात मान लो।फिर दूसरे इण्टरनेशनल के उन महानुभावों को जवाब देते हुए वे कहते हैं : मान लीजिए कि ऐसी ऐतिहासिक स्थिति उत्पन्न हो गयी है (जैसे युद्ध, कृषि-संकट, आदि) जिसमें सर्वहारा वर्ग, तमाम जनसंख्या के हिसाब से अल्पमत में होते हुए भी, इस अवस्था में है कि वह श्रमजीवियों के विशाल जनसमूह को अपने पक्ष में कर सकता है, तो इस हालत में उसे राजसत्ता को अपने हाथ में क्यों नहीं ले लेना चाहिए?अन्तर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय परिस्थितियों के अनुकूल होने से यदि सर्वहारा वर्ग को पूंजीवादी मोर्चे को बेधकर निपटारे का दिन समीप लाने का अवसर मिलता है तो वह उसका क्यों न लाभ उठाये?क्या मार्क्स ने पिछली सदी के छठे दशक में यह नहीं कहा था कि यदि जर्मनी की सर्वहारा क्रांति को 'किसान-युद्धों की तरह के' किसान संघर्षों द्वारा सहायता पहुंचायी जा सकती तो वह 'अत्यंत गौरव के साथ' सफल होती?और क्या यह आमतौर से जानी हुई बात नहीं है कि जर्मनी में उन दिनों 1917 के रूस की अपेक्षा मजदूरों की संख्या कम थी? रूस की मजदूर क्रांति के व्यावहारिक

अनुभव से ही क्या यह बात सिद्ध नहीं हो गयी है कि दूसरे इंटरनेशनल के सूरमाओं का यह प्यारा मतवाद मजदूरों के लिए कोई महत्व नहीं रखता? क्या यह स्पष्ट नहीं है कि जनता के क्रांतिकारी संघर्षों के अनुभवों ने इस जीर्ण-शीर्ण मतवाद की धज्जी उड़ा दी है?

"दूसरा मतवाद है:जबतक सर्वहारा वर्ग के पास शासन का भार संभालने और उसका संगठन करने की योग्यता रखने वाले दक्ष शासक और शिक्षक न हों तब तक वह राजसत्ता को अपने हाथ में नहीं रख सकता।इसलिए उसे इस तरह के योग्य कार्यकर्ताओं के पूंजीवादी राज्य व्यवस्था के अंतर्गत शिक्षित और तैयार कर लेने के बाद ही राजसत्ता पर अधिकार करने की बात सोचनी चाहिए। इसके उत्तर में लेनिन कहते हैं : मान लो ऐसी ही बात है। किंतु ऐसा क्यों न करो कि पहले राजसत्ता पर अधिकार कर लो और इस प्रकार सर्वहारा वर्ग के समुचित विकास के लिए अनुकूल परिस्थिति उत्पन्न करके श्रमजीवी जन समूह के सांस्कृतिक धरातल को ऊंचा करने की दिशा में लंबे-लंबे डग बढ़ाओ और मजदूरों के अंदर से सैकड़ों शिक्षक,नेता और शासक तैयार कर लो। मजदूरों की पांत से चुने हुए कार्यकर्ता सर्वहारा राज्य की छत्रछाया में पूंजीवादी राज्य की अपेक्षा सौ गुनी तेजी से बढ़ते और नेतृत्व की योग्यता प्राप्त करते हैं। क्या इन बातों को रूस के अनुभव ने स्पष्ट नहीं कर दिया है? क्या यह भी स्पष्ट नहीं है कि जनता के क्रांतिकारी संघर्ष के अनुभवों ने अवसरवादियों के इस सैद्धान्तिक मतवाद की भी धज्जी-धज्जी उड़ा दी है।" (वही,पृष्ठ 17-18)

लेनिन ने अपनी पेशेवर क्रांतिकारी आधारित दृढ़, अनुशासन वाली पार्टी की अवधारणा 'क्या करें?' में इस प्रकार प्रस्तुत की थी:

"...जैसा कि मैं बार-बार कह चुका हूं, संगठन के संबंध में 'बुद्धिमानों' से मेरा मतलब ***पेशेवर क्रांतिकारियों*** से है। उसमें इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि उनको विद्यार्थियों में से प्रशिक्षित किया गया है या मजदूरों में से। मैं जोर देकर यह कहता हूं : (1) नेताओं के एक स्थाई और आंदोलन का क्रम बनाये रखने वाले संगठन के बिना कोई भी क्रांतिकारी आंदोलन टिकाऊ नहीं हो सकता; (2) जितने अधिक व्यापक पैमाने पर जनता स्वयंस्फूर्त ढंग से संघर्ष में खिंचते हुए आंदोलन का आधार बनेगी और उसमें भाग लेगी, ऐसा संगठन बनाना उतना ही जरूरी होता जायेगा, और इस संगठन को उतना ही अधिक मजबूत बनना होगा (क्योंकि जनता के अधिक पिछड़े हुए हिस्सों को गुमराह करना लफ्फाजों के लिए ज्यादा आसान होता है); (3) इस प्रकार के संगठन में मुख्यतया ऐसे लोगों को होना चाहिए, जो अपने पेशे के रूप में क्रांतिकारी कार्य करते हों; (4)निरंकुश राज्य में इस प्रकार के संगठन की सदस्यता को हम जितना ही अधिक ऐसे लोगों तक ***सीमित*** रखेंगे,जो अपने पेशे के रूप में क्रांतिकारी कार्य करते हों और जो राजनीतिक पुलिस को मात देने की विद्या सीख चुके हों ऐसे संगठन का 'सफाया करना' उतना ही अधिक मुश्किल होगा; और (5)मजदूर वर्ग तथा समाज के अन्य वर्गों के उतने ही ***अधिक*** लोगों के लिए यह संभव हो सकेगा कि वे आंदोलन में शामिल हों और सक्रिय काम करें।"(लेनिन,क्या करें?,वही, पृष्ठ-161-162, जोर मूल में)

इसकी व्याख्या करते हुए बोल्शेविक पार्टी का इतिहास में यह कहा गया है:

"जहां तक पार्टी की बनावट और ढांचे का संबंध था, लेनिन का विचार था कि उसके दो हिस्से होने चाहिए-(अ)पार्टी के नियमित प्रमुख कार्यकर्ताओं का एक भीतरी व्यूह हो, जिसमें मुख्यकर- पेशेवर क्रांतिकारी हों,यानी पार्टी के ऐसे कार्यकर्ता जो पार्टी के काम के अलावा और सभी कामों से आजाद हों और जिनके पास कम से कम आवश्यक सैद्धान्तिक ज्ञान, राजनीतिक अनुभव, संगठन का अभ्यास और जार की पुलिस का मुकाबला करने तथा बचने की कला हो; (आ) स्थानीय पार्टी संगठनों का विशद जाल हो और पार्टी सदस्यों की एक बड़ी तादाद हो, जिनकी तरफ लाखों मेहनतकशों की हमदर्दी हो और वे उनका समर्थन करते हों।" (सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी [बोल्शेविक] का इतिहास, राहुल फाउण्डेशन, लखनऊ, 2003,पृष्ठ-43)

लेनिन ने रूसी मजदूर पार्टी की दूसरी कांग्रेस (1903)में ऊपर से नीचे तक सुगठित पार्टी के निर्माण के लिए अनथक संघर्ष किया। उनके विरोधी मेंशेविक दूसरे इंटरनेशनल की पार्टियों की तर्ज पर एक ढीली-ढाली पार्टी बनाना चाहते थे। उनके विचारों के सारतत्व का उद्घाटन करते हुए लेनिन ने यह कहा था:

"...सच तो यह है कि कामरेड अक्सेल्रोद और कामरेड मार्तोव आजकल केवल पहली धारा वाली अपनी प्रारंभिक गलती को ही विकसित कर रहे हैं, उसे और गहरा तथा व्यापक बना रहे हैं। सच तो यह कि संगठनात्मक प्रश्नों पर अवसरवादियों का पूरा रुख- मजबूत और गठे हुए पार्टी संगठन के बजाय एक बिखरे हुए संगठन की पैरवी; पार्टी का निर्माण करने में ऊपर से नीचे की ओर बढ़ने और पार्टी कांग्रेस तथा उसके द्वारा स्थापित की गयी संस्थाओं से आरंभ करने का विचार ('नौकरशाही' विचार का)विरोध; उनकी नीचे से ऊपर की ओर बढ़ने की प्रवृत्ति, जो हर प्रोफेसर, हर स्कूली विद्यार्थी और 'हर हड़ताली' को अपने को पार्टी का सदस्य घोषित करने का हक दे देगी; उस 'औपचारिकता' से बैर जो मांग करती है कि हर पार्टी मेम्बर को पार्टी से मान्यता प्राप्त किसी न किसी संगठन में शरीक होना चाहिए; उस पूंजीवादी बुद्धिजीवी की मनोवृत्ति की ओर झुकाव, जो 'संगठनात्मक संबंधों को केवल भावनात्मक रूप में ही मानने' को तैयार होता है; अवसरवादी गूढ़ता और अराजकतावादी शब्दावली इस्तेमाल करने का शौक; केन्द्रीयतावाद के मुकाबले स्वायत्तता की ओर रुझान, संक्षेप में वह सब कुछ जो आजकल नये 'इस्क्रा' के स्तंभों में इतनी इफरात के साथ फल-फूल रहा है-पहली धारा वाले विवाद के समय ही सामने आने लगा था और

इस समय वह केवल उस पहली गलती की पूर्ण एवं स्पष्ट व्याख्या करने के कार्य को अधिकाधिक सुगम बना रहा है।" (लेनिन, एक कदम आगे, दो कदम पीछे, प्रगति प्रकाशन,मास्को,1985,पृष्ठ-7)

महत्वपूर्ण बात यह है कि पार्टी द्वारा वर्ग को पृष्ठभूमि में ढकेल दिये जाने के आरोप इसी कांग्रेस में अवसरवादियों द्वारा लगाये गये थे। (इस कांग्रेस में प्लेखानोव और लेनिन एक साथ थे)लेनिन लिखते हैं:

"पहली मिसाल: पार्टी कांग्रेस में कार्यक्रम की बहस। कामरेड अकीमोव (कामरेड मार्तीनोव के साथ 'पूर्ण सहमति' प्रकट करते हुए) कहते हैं : 'राजनीतिक सत्ता पर अधिकार करने से (सर्वहारा के अधिनायकत्व से) संबंधित धारा इस तरह लिखी गयी है कि-अन्य सभी सामाजिक जनवादी पार्टियों के कार्यक्रमों के मुकाबले में- इसका यह अर्थ लगाया जा सकता है, और प्लेखानोव ने सचमुच इसका यह अर्थ लगाया है, कि नेतृत्व करने वाले संगठन की भूमिका उस वर्ग को, जिसका नेतृत्व किया जा रहा है, पृष्ठभूमि में डाल देगी और संगठन को वर्ग से अलग कर देगी। इसके परिणामस्वरूप हमारे राजनीतिक कार्य ठीक वही बताये गये हैं जो 'नरोदनाया वोल्या' के कार्य हैं' (कार्यवाही, पृष्ठ 124)। कामरेड प्लेखानोव और दूसरे 'इस्क्रा'-वादी कामरेड अकीमोव को जवाब देते हैं और उन पर अवसरवाद का आरोप लगाते हैं।... " (वही, पृष्ठ-259)

अकीमोव और मार्तीनोव पुराने अर्थवादी थे और इस कांग्रेस में पक्के अवसरवादी। गौर करने की बात है कि इन्होंने रूसी पार्टी के कार्यक्रम पर पार्टी संगठन द्वारा वर्ग को पृष्ठभूमि में डाल देने का आरोप दूसरी पार्टियों के बरक्स लगाया था। दूसरी पार्टियों से आशय दूसरी इंटरनेशनल की पार्टियों से था जो वर्ग को पृष्ठभूमि में डालने का गुनाह नहीं करती थीं। इससे स्पष्ट है कि लेनिनवादी पार्टी पर मजदूर वर्ग को पृष्ठभूमि में डालने का,उसका स्थानापन्न हो जाने का आरोप एकदम शुरू से ही है और दूसरी पार्टी कांग्रेस में लेनिन के साथ होने के कारण तब प्लेखानोव भी गुनहगार थे हालांकि जल्दी ही मेंशेविकों का दामन थाम कर उन्होंने प्रायश्चित कर लिया। यह याद रखने की बात है कि फरवरी क्रांति के बाद मजदूर वर्ग द्वारा सत्ता अपने हाथ में लेने की ओर बढ़ने का मेंशेविकों के साथ-साथ प्लेखानोव ने भी दृढ़ विरोध किया था।

सर्वहारा अधिनायकत्व के संदर्भ में पार्टी की भूमिका को लेनिन ने बाद में इस तरह रेखांकित किया था:

"सर्वहारा अधिनायकत्व एक अनवरत संघर्ष है जो पुराने समाज की शक्तियों, और परंपराओं के विरुद्ध शांतिपूर्ण और अशांतिपूर्ण, हिंसात्मक और अहिंसात्मक तथा सैनिक और आर्थिक ढंग से एवं शिक्षा और शासन की व्यवस्थाओं द्वारा चलाया जाता है। लाखों और करोड़ों मनुष्यों की पुरानी आदतों की शक्ति एक भयंकर चीज है। अतएव संघर्ष की आंच में तपकर इस्पात जैसी दृढ़ बनी हुई एक पार्टी के बिना, अपने वर्ग के समस्त ईमानदार लोगों का विश्वास प्राप्त पार्टी के बिना, जनता की प्रवृत्तियों को परखने और उन्हें बदलने में समर्थ पार्टी के बिना इस तरह के संघर्ष का सफलतापूर्वक संचालन करना असंभव है।"(स्तालिन द्वारा 'लेनिनवाद के मूल सिद्धान्त' में उद्धृत,वही, पृष्ठ-94)

सर्वहारा वर्ग की पार्टी, कम्युनिस्ट पार्टी, के लेनिनवादी सिद्धांतों का बोल्शेविक पार्टी के इतिहास में इस तरह सार संकलन किया गया है:

"1.मार्क्सवादी पार्टी मजदूर वर्ग का एक हिस्सा है, उसका एक दस्ता है।लेकिन मजदूर वर्ग के बहुत से दस्ते हैं और इसलिए मजदूर वर्ग का हर हिस्सा उसकी पार्टी नहीं कहला सकता। मजदूर वर्ग के दूसरे दस्तों में पार्टी सबसे पहले इस बात में भिन्न है कि वह मामूली दस्ता नहीं है बल्कि ***हिरावल*** दस्ता है, एक ***वर्ग-चेतन*** दस्ता है, मजदूर वर्ग का एक ***मार्क्सवादी*** दस्ता है,जो सामाजिक जीवन के ज्ञान से सुसज्जित है, जो सामाजिक विकास के नियमों और वर्ग संघर्ष के नियमों को जानता-पहचानता है और इस वजह से मजदूर वर्ग की अगुवाई कर सकता है व उसकी लड़ाई का संचालन कर सकता है। इसलिए पार्टी और मजदूर वर्ग को उलझा नहीं देना चाहिए,जैसे कि किसी पूरी चीज और उसके हिस्से को उलझा नहीं देना चाहिए। हम यह मांग नहीं कर सकते कि हर हड़ताली अपने को पार्टी का सदस्य कह सके, क्योंकि जो कोई पार्टी और वर्ग को उलझाता है वह पार्टी की चेतना के स्तर को 'हर हड़ताली' की चेतना के स्तर पर ले आता है। वह मजदूर वर्ग के वर्ग-चेतन हिरावल के रूप में पार्टी का नाश करता है। पार्टी का काम यह नहीं है कि वह अपनी सतह 'हर हड़ताली' के स्तर तक ***नीचे ले आये***, बल्कि पार्टी के स्तर तक आम मजदूरों को ***ऊपर उठाये***, 'हर हड़ताली' को ***ऊपर उठाये।***'

" 2. पार्टी मजदूर वर्ग का हिरावल ही नहीं, उसका वर्ग चेतन दस्ता ही नहीं, बल्कि मजदूर वर्ग का ***संगठित*** दस्ता है, जिसका अपना अनुशासन है और जो उसके अपने सदस्यों पर लागू होता है। इसलिए, पार्टी सदस्यों के लिए यह जरूरी है कि वे ***किसी पार्टी*** संगठन के सदस्य हों ही। अगर पार्टी वर्ग का ***संगठित*** दस्ता न होती, ***संगठन की व्यवस्था*** न होती बल्कि सिर्फ उन लोगों की एक जमात होती जो अपने को पार्टी का सदस्य कहते हैं, लेकिन संगठन में नहीं हैं और इसलिए ***संगठित*** नहीं हैं, इसलिए पार्टी के फैसले मानने के लिए मजबूर नहीं हैं, तो पार्टी की कभी संयुक्त इच्छा न होती, वह अपने सदस्यों की संयुक्त कार्यवाही कभी नहीं चला सकती और इसलिए वह मजदूर वर्ग के संघर्ष का संचालन ही नहीं कर सकती। पार्टी मजदूर वर्ग के अमली संघर्ष का नेतृत्व तभी कर सकती है और उसे एक ही उद्देश्य की तरफ ले जा सकती है, जब उसके सभी सदस्य एक ही सामान्य दस्ते में संगठित हों, इच्छा की एकता में आपस में संयुक्त हो; काम की एकता और अनुशासन की एकता से एक-दूसरे से जुड़े हुए हों।

"3. पार्टी सिर्फ संगठित दस्ता नहीं है, बल्कि मजदूर वर्ग के '***संगठन के सभी रूपों में सबसे ऊंचा***' है और उसका काम मजदूर वर्ग के दूसरे सभी संगठनों को रास्ता दिखाना है। पार्टी वर्ग के संगठन का सबसे ऊंचा रूप है, वर्ग के सबसे अच्छे लोग उसमें शामिल होते हैं, उसके पास आगे बढ़ा हुआ सिद्धान्त होता है, उसे वर्ग संघर्ष के नियमों का ज्ञान होता है और उसे क्रांतिकारी आंदोलन का तजुर्बा होता है। इसलिए मजदूर वर्ग के सभी दूसरे संगठनों को पार्टी रास्ता दिखला सकती है, और उन्हें रास्ता दिखाना उसका फर्ज है। पार्टी की नेतृत्व की भूमिका को कम करने और तुच्छ समझने की मेंशेविकों की कोशिश का असर यह होगा कि सर्वहारा वर्ग के वे दूसरे सभी संगठन कमजोर होंगे जिन्हें पार्टी रास्ता दिखाती है।उनकी कोशिश का असर यह होगा कि सर्वहारा वर्ग कमजोर और निहत्था बनेगा, क्योंकि 'सत्ता के लिए संघर्ष में सर्वहारा के पास संगठन को छोड़कर दूसरा कोई हथियार नहीं हैं।" (उपर्युक्त, पृष्ठ 340)

"4.पार्टी लाखों मजदूरों से मजदूर वर्ग के हिरावल के ***संबंध का सजीव रूप है***। पार्टी चाहे जितनी अच्छी हिरावल हो और चाहे जितनी अच्छी तरह संगठित हो, गैर-पार्टी अवाम से संबंध कायम किये बिना और इस संबंध को बढ़ाये और मजबूत किये बिना वह न तो जीवित रह सकती है और न विकसित हो सकती है। ऐसी पार्टी जो अपने को अपने ही खोल में बंद कर लेती है, आम जनता से अलग जा पड़ती है, अपने वर्ग से अपना संबंध खो देती है या ढीला कर लेती है, वह जरूर आम जनता का विश्वास या समर्थन खो देगी और इसलिए खत्म भी जरूर हो जायेगी। पूरी तरह जिंदा रहने और विकसित होने के लिए, यह जरूरी है कि पार्टी आम जनता से अपना संबंध बढ़ाये और अपने वर्ग के लाखों आदमियों का विश्वास हासिल करे।"

"5.उचित ढंग से काम करने के लिए और बाकायदा आम जनता का नेतृत्व करने के लिए, पार्टी को ***केन्द्रीयता*** के उसूल पर संगठित होना चाहिए। उसकी एक सी नियमावली और एक सा पार्टी अनुशासन होना चाहिए। उसकी एक ही प्रमुख संस्था होनी चाहिए-पार्टी कांग्रेस और कांग्रेसों के बीच में पार्टी की केन्द्रीय कमेटी। अल्पमत को बहुमत की आज्ञा माननी चाहिए, विभिन्न संगठनों को केन्द्र की आज्ञा माननी चाहिए और नीचे के संगठनों को ऊपर के संगठनों की आज्ञा माननी चाहिए। ये शर्तें पूरी न होने पर, मजदूर वर्ग की पार्टी सच्ची पार्टी नहीं बन सकती और वर्ग का नेतृत्व करने का काम पूरा नहीं कर सकती।"

"6.***अपने*** अमली काम में अगर पार्टी अपनी कतारों की एकता कायम रखना चाहती है तो उसे समान सर्वहारा अनुशासन लागू करना होगा, जिसकी पाबंदी सभी पार्टी के सदस्यों के लिए, नेता और साधारण दोनों के लिए, बराबर हो। इसलिए, पार्टी के अंदर कुछ 'चुने हुए' लोग जिन पर अनुशासन लागू न हो, और 'बाकी तमाम लोग' जिन पर पार्टी अनुशासन लागू होता है, ऐसा बंटवारा नहीं होना चाहिए। यह शर्त पूरी नहीं की जायेगी तो पार्टी की भीतरी दृढ़ता और उसकी कतारों में एकता कायम नहीं रखी जा सकेगी।" (वही पृष्ठ-55-59, जोर मूल में)

सार रूप में कहें तो लेनिन के अनुसार कम्युनिस्ट पार्टी मजदूर वर्ग का वह हिरावल दस्ता है जो संगठित और अनुशासनबद्ध है तथा जो मजदूर वर्ग से घनिष्ठ संबंध बनाते हुए, किसी हद तक उससे एकाकार होते हुए मजदूर वर्ग को जागृत, गोलबंद व संगठित करता है तथा वर्ग-संघर्ष की हर अवस्था में उसका नेतृत्व करता है। वह केवल उसे 'गाइड' नहीं करता, वह उसको नेतृत्व देता है।

जैसा कि पहले कहा गया है लेनिन की पार्टी की इस अवधारणा का तब तीखा विरोध हुआ था। अवसरवादी तो इसके विरोधी थे ही, क्रांतिकारी भी इसके विरोधी थे। बाद में लेनिन की पार्टी की अवधारणा पर जो आरोप लगते रहे हैं वे सारे तभी लग गये थे। वर्ग को स्थानापन्न करने, वालंटरिज्म, रेजिमेंटेशन, दमघोंटू केन्द्रीयता, नौकरशाही, सवारी गांठने इत्यादि के आरोप तभी लग गये थे। कुछ की बानगी यहां दी जा रही है।

बोल्शेविकों-मेंशेविकों के बीच विवाद में हस्तक्षेप करते हुए रोजा लक्जमबर्ग ने यह लिखा:

"यदि हम लेनिन द्वारा अपना घोषित किये गये दृष्टिकोण अपनायें और सर्वहारा के आंदोलन में बुद्धिजीवियों के प्रभाव से डरें तो हमें लेनिन द्वारा प्रस्तावित संगठन की योजना से ज्यादा खतरनाक रूसी पार्टी के लिए कुछ नहीं लगेगा। ***इस नौकरशाही खांचे से ज्यादा कोई भी चीज युवा मजदूर आंदोलन को सत्ता के भूखे बुद्धिजीवी का गुलाम नहीं बनायेंगी, जो इस आंदोलन को विशृंखलित कर देगी और इसे केन्द्रीय कमेटी द्वारा छल नियोजित निष्प्राण उपकरण बना देगी।*** इसके विपरीत अवसरवादी षड्यंत्र तथा व्यक्तिगत महत्वाकांक्षाओं के खिलाफ सर्वहारा की स्वतंत्र कार्यवाहियों से ज्यादा प्रभावी गारंटी और कुछ नहीं हो सकती जिसके द्वारा मजदूर राजनीतिक जिम्मेदारी की भावना तथा आत्मनिर्भरता हासिल करते हैं।"**(Rosa Luxmburg, Organisational Question of Russian Social Democracy. [Maxism or Leninism?], Marxist Archive Edition,** अनुवाद हमारा,जोर मूल में)

लेनिन के 'एक कदम आगे, दो कदम पीछे' के बाद ट्राट्स्की ने अपनी पुस्तिका 'हमारे राजनीतिक कार्यभार' में यह लिखा:

" पार्टी की आंतरिक राजनीति में ये तौर-तरीके पार्टी संगठन से पार्टी को 'स्थानापन्न' करने, केन्द्रीय कमेटी द्वारा खुद से पार्टी संगठन को 'स्थानापन्न' करने और अंत में एक तानाशाह द्वारा स्वयं से केन्द्रीय कमेटी को 'स्थानापन्न'करने की ओर ले जाते हैं

... ..." **(Trotsky,Our Political Tasks, Marxist Archive edition,** अनुवाद हमारा) ।

इसके पहले ट्राट्स्की मजदूर वर्ग की राजनीतिक भूमिका को पार्टी द्वारा 'स्थानापन्न' किये जाने की चर्चा कर चुके होते हैं।

और अंत में मार्तोव का एक छोटा सा व्यंग्य जो उन्होंने इसी विवाद के दौरान लिखा था:

"अखिल रूसी सामाजिक जनवादी मजदूर पार्टी का संक्षिप्त संविधान

('कठोरों' का महत्तम संविधान)

1. पार्टी बैठने वालों और बैठे जाने वालों में विभाजित है।

नोट : वे समूह और व्यक्ति जो न तो बैठना चाहते हैं और जो न तो बैठे जाने के लिए तैयार हैं, उन्हें उन्मूलित किया जाता है।

2. आम तौर पर बैठने वालों का काम है बैठना। जहां तक उन लोगों का सवाल है जिन पर बैठा जाना है तो उनका मुख्य काम यही है कि उन पर बैठा जाय।

3. केन्द्रीयतावाद के हित में बैठने वाले अलग-अलग विश्वास के हकदार होंगे। जहां तक बैठे जाने वालों का सवाल है, वे सभी अपने अधिकारों में समान हैं।

4. जो लोग बैठ चुके हैं उन्हें पुरुष्कृत करने के लिए एक परिषद गठित की जाती है। हां, यदि वे चाहें तो स्वतंत्र रूप में भी बैठ सकते हैं।

5. इस श्रेणी क्रम के चरम पर एक पांचवा है जिसके बैठने के अधिकार केवल प्रकृति द्वारा सीमित हैं।

6. केन्द्रीय मुखपत्र का बैठने का अधिकार आत्मिक तर्क-वितर्क से बनाये रखा जाता है। तर्क-वितर्क से समझाये जा चुके लोगों द्वारा प्रतिरोध की स्थिति में उन्हें केन्द्रीय समिति के सुपुर्द कर दिया जायेगा।

7. तब केन्द्रीय समिति ***कार्यवाही*** करती है।

8. जिन पर बैठा जाता है वे पार्टी कोष में योगदान करते हैं जिससे बैठने वालों का और प्रचार का खर्च चलता है।

9. वक्त आने पर सभी पार्टी सदस्य, बैठने वाले और बैठे जाने वाले, क्रांति सम्पन्न करेंगे।

नोट: इस कर्तव्य से उन्हें छूट है जिन पर पर्याप्त और पूर्णतया बैठा जा चुका है।

और वे कहते हैं कि रूसी अपने विचारों को सूक्ष्म तीक्ष्णता से कहने में अक्षम हैं!" **(L. Martov, Marxist Internet Archive)**

लेनिनवादी पार्टी की इस आलोचना में चिंतनधारा एक ही है। ये सभी दूसरे इंटरनेशनल की पार्टी और वर्ग के संबंध में प्रचलित धारणाओं से इस या उस हद तक निर्देशित हैं। यह गौरतलब है कि ट्राटस्की ने बाद में अपने इन विचारों से स्वयं को अलग कर लिया और घोषित किया कि रूसी पार्टी की दूसरी कांग्रेस के बाद उनका 'नरम' यानी मार्तोव इत्यादि के साथ खड़ा होना गलत था। उनके अनुसार केवल तब लेनिन ही आगामी क्रांति की आवश्यकताओं को दूर तक देख पा रहे थे (देखें 'मेरा जीवन',12वां अध्याय)।

वैसे देखें तो लेनिनवादी पार्टी की अवधारणा की इस आलोचना में यथार्थ का एक तत्व निहित है। सभी अंतर्विरोधों की तरह लेनिनवादी पार्टी के अंतर्विरोध का गौण पहलू, अंतर्विरोध का विपरीत या नकारात्मक पहलू वही है जिसकी ओर सारे आलोचक इंगित कर रहे थे। मजदूर वर्ग की क्रांति में मजदूर वर्ग को नेतृत्व प्रदान करने वाली पार्टी में वे सारे गुण होने ही चाहिए जो लेनिनवादी पार्टी की अवधारणा में हैं। एक सुगठित, केन्द्रीकृत पार्टी ही मजदूर वर्ग का क्रांति में नेतृत्व कर सकती है और बिना इस नेतृत्व के मजदूर वर्ग अपने ऐतिहासिक मिशन की ओर नहीं बढ़ सकता। लेकिन तब यही चीज मजदूर वर्ग की ऐतिहासिक पहलकदमी को बाधित कर सकती है। पार्टी की सक्रियता वर्ग की सक्रियता का स्थानापन्न बन सकती है। इसी तरह केन्द्रीयता पार्टी के भीतर जनवाद के निषेध तक जा सकती है। सत्ताधारी पार्टी होने पर पूरी पार्टी स्वयं ही मजदूर वर्ग से अलग होकर उस पर शासन करने वाली पार्टी बन सकती है। एक क्रांतिकारी पार्टी के पतित होने की स्थिति में अनिवार्यत: ही ऐसा होगा जैसा कि सोवियत संघ में खुश्चोव-ब्रेझनेव काल में तथा चीन में डेंग स्याओ पिंग काल में और उसके बाद हुआ। चीज अपने विपरीत में बदल गयी। पार्टी मजदूर वर्ग को उसकी मुक्ति में नेतृत्व प्रदान करने के बदले उसकी गुलामी का बायस बन गयी।

एक ओर मार्क्सवाद यह कहता है कि मजदूर वर्ग की मुक्ति स्वयं मजदूर वर्ग का काम है। दूसरी ओर मार्क्सवाद यह भी कहता है कि मजदूर वर्ग की मुक्ति की विचारधारा उसके आंदोलन में बाहर से लाई जाती है तथा केवल कम्युनिस्ट पार्टी ही मजदूर वर्ग का नेतृत्व कर उसे मुक्ति की ओर ले जा सकती है। इन दोनों बातों में जो अंतर्विरोध है वह वास्तव में मजदूर वर्ग के भीतर का अंतर्विरोध है, पूंजीवाद में उसकी वर्तमान स्थिति और उसके ऐतिहासिक मिशन में उसकी भूमिका के बीच का अंतर्विरोध है, 'अपने आप में वर्ग' तथा 'अपने लिए वर्ग' के बीच का अंतर्विरोध है, वह अभी जो है तथा इतिहास विकास के क्रम में जो हो सकता है उसके बीच का अंतर्विरोध है। मजदूर वर्ग इसी अंतर्विरोध के जरिये ही ऐतिहासिक तौर पर विकास करता है। लेनिनवादी पार्टी के संदर्भ में यही अंतर्विरोध एक दूसरे रूप में अभिव्यक्त होता है।

लेनिनवादी पार्टी के भीतर मौजूद इस अंतर्विरोध को सही तरीके से हल करने के जरिये ही पार्टी अपना वास्तविक क्रांतिकारी चरित्र बनाये रख सकती है तथा अपने को विपरीत में बदलने से रोक सकती है। लेकिन इस अंतर्विरोध की मौजूदगी का, जो अनिवार्य है, यह मतलब नहीं है कि लेनिनवादी पार्टी की अवधारणा को त्याग कर सुधारवादी पार्टियों की अवधारणा स्वीकार कर ली जाये तथा बुर्जुआ सुधारवाद के दलदल में डूब जाया जाये।

IV
सोवियत और चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के अनुभव

सोवियत संघ और चीन की कम्युनिस्ट पार्टियों का अनुभव पार्टी के बारे में उपरोक्त लेनिनवादी अवधारणाओं की सटीकता की तस्दीक़ करता है। हम इन पार्टियों के अनुभव को वर्ग के साथ पार्टी के संबंध तथा पार्टी की अंदरूनी कार्य पद्धति दोनों मामले में ही इसे देखते हैं।

रूस की फरवरी 1917 की क्रांति, जो जारशाही विरोधी जनवादी क्रांति थी, मजदूर वर्ग के कमोबेश स्वत: स्फूर्त विद्रोह से हुई थी। इसमें निर्णायक भूमिका राजधानी पेत्रोग्राद के मजदूर वर्ग ने निभाई थी। हालांकि मजदूर वर्ग में बोल्शेविकों समेत भांति-भांति की क्रांतिकारी पार्टियां सक्रिय थीं तब भी जब फरवरी विद्रोह हुआ तो वह पार्टियों द्वारा कोई योजनाबद्ध विद्रोह नहीं था।इस विद्रोह में पार्टियों ने सक्रिय और महत्वपूर्ण भूमिका निभाई लेकिन यह उनकी किसी योजना का परिणाम नहीं था। इस रूप में कहें तो इस जनवादी क्रांति में मजदूर वर्ग ने स्वयं ऐतिहासिक पहलकदमी ली।

लेकिन इसके तुरंत बाद मज़दूर वर्ग की पहलकदमी की सीमा नजर आने लगी। क्रांति के साथ जो सोवियतें अस्तित्व में आयीं, और जो दोहरी सत्ता में से एक सत्ता केन्द्र बनीं, उनमें मजदूर वर्ग की अवसरवादी पार्टियों का बहुमत था। ये अवसरवादी पार्टियां पूरी क्रांति को ही बुर्जुआ जनवादी दायरे में समेट देने के लिए कटिबद्ध थीं। रूस का पिछड़ापन इनके लिए पलायन का सैद्धान्तिक आधार प्रदान करता था।

यहीं पर बोल्शेविक पार्टी की विश्व ऐतिहासिक भूमिका सामने आयी। यदि बोल्शेविक पार्टी न होती तो मजदूर वर्ग अवसरवादी पार्टियों से असंतुष्ट होने के बावजूद आगे नहीं बढ़ पाता। उसकी असंतुष्टि छिट-पुट विद्रोहों तथा अंत में राजनीतिक निष्क्रियता में बदल जाती। बुर्जुआ जनवादी व्यवस्था को चुनौती समाप्त हो जाती तथा सारा कुछ उसी तक सिमट जाता। नवंबर 1918 में जर्मनी में क्रांति के बाद वहां यही हुआ।

यह ध्यान देने की बात है कि अवसरवादी पार्टियों से असंतुष्ट होने के बावजूद मजदूर वर्ग बोल्शेविक पार्टी के पीछे तुरंत नहीं गोलबंद हो गया। इसके लिए बोल्शेविकों को अनथक श्रम करना पड़ा। कहीं अगस्त-सितम्बर में जाकर ही बोल्शेविक दोनों राजधानियों के मजदूरों के बहुमत का समर्थन हासिल कर पाये। और जब इस पार्टी के नेतृत्व में मजदूर वर्ग ने अक्टूबर में सत्ता पर कब्जा किया तब उसके हाथ में विश्व इतिहास को गति देने की जबर्दस्त पहलकदमी आ गई। जब कुछ स्वनामधन्य लोगों द्वारा बात को इस तरह प्रस्तुत किया जाता कि मजदूर वर्ग ने अपनी पहलकदमी पर अक्टूबर क्रांति को अंजाम दिया तथा बाद में बोल्शेविक पार्टी के कारण यह पहलकदमी समाप्त हो गयी (कुछ इसे लेनिन काल में मानते हैं और कुछ लेनिन के बाद) तो यह ऐतिहासिक तथ्यों का बेमिसाल विकृतिकरण है। वास्तव में फरवरी क्रांति से लेकर अक्टूबर क्रांति का समूचा काल ही मजदूर वर्ग की तथा उसकी पार्टी की वास्तविक ऐतिहासिक भूमिका का, इनके वास्तविक संबंधों का बहुत अच्छा चित्रण प्रस्तुत करता है। मजदूर वर्ग स्वयं अपने बूते पर क्या हासिल कर सकता है और क्या हासिल नहीं कर सकता तथा उसकी वास्तविक क्रांतिकारी पार्टी कैसे उसकी ऐतिहासिक पहलकदमी खोलती है यह रूसी मजदूर वर्ग और बोल्शेविक पार्टी के साथ इस काल में उसके संबंध से भली-भांति प्रदर्शित होता है।

अक्टूबर क्रांति रूसी मजदूर वर्ग की क्रांति थी लेकिन इस क्रांति तक मजदूर वर्ग को पहुंचाने का और इस तरह उसकी ऐतिहासिक पहलकदमी खोलने का काम बोल्शेविक पार्टी ने किया। बोल्शेविक पार्टी की अनुपस्थिति में यह नहीं हो सकता था। ठीक यही काल लेनिन जैसे नेता के महत्व को भी रेखांकित करता है जिनके बिना बोल्शेविक पार्टी वह न कर पाती जो उसने किया। बोल्शेविक पार्टी के निर्माण में लेनिन की भूमिका को तो छोड़ ही दें, यदि लेनिन न होते तो बोल्शेविक पार्टी फरवरी क्रांति से अक्टूबर क्रांति तक न पहुंच पाती। स्तालिन के शब्दों में लेनिन ही अक्टूबर क्रांति के प्रेरणा स्रोत तथा नेता थे।

अक्टूबर क्रांति की ही तरह जब बाद में विश्व क्रांति में ठहराव आ जाने के बाद अकेले सोवियत संघ में समाजवाद का निर्माण करने का निर्णय लिया गया तब इसने एक बार फिर मजदूर वर्ग की ऐतिहासिक पहलकदमी खोली। सोवियत संघ में समाजवाद का निर्माण मजदूर वर्ग ने खुद नहीं किया। इसमें बोल्शेविक पार्टी ने उसका नेतृत्व किया। यही नहीं, उसी ने इसका निर्णय लेकर मजदूर वर्ग की ऐतिहासिक पहलकदमी खोली।

इसीलिए क्रांति और समाजवाद की उपलब्धियों को मजदूर वर्ग को समर्पित करना तथा कमियों-दिक्कतों को बोल्शेविक पार्टी के मत्थे मढ़ना निहायत गलत है। दोनों ही अपने समय के उत्पाद थे और इसने दोनों की सीमाएं बांधी। लेकिन इस तथ्य को हलका नहीं किया जा सकता कि रूस की क्रांति तथा क्रांतिकारी मजदूर वर्ग ने बोल्शेविक पार्टी को पैदा किया और बोल्शेविक पार्टी ने क्रांति में उसका नेतृत्व किया। बोल्शेविक पार्टी एक क्रांतिकारी मजदूर वर्ग का नेतृत्व कर पाई तो इसलिए कि रूस में एक क्रांतिकारी मजदूर वर्ग मौजूद था और रूस क्रांति की अवस्था में था। ठीक इसी तरह रूस का मजदूर वर्ग क्रांति सम्पन्न कर पाया तो इसलिए कि उसे बोल्शेविक पार्टी जैसी पार्टी का नेतृत्व हासिल था।

सोवियत समाजवाद में बाद में जो समस्यायें पैदा हुईं उसके लिए किसी हद तक बोल्शेविक पार्टी और उसके नेता स्तालिन जिम्मेदार थे जिसका समग्र विश्लेषण माओ ने किया। लेकिन साथ ही यह ध्यान रखा जाना चाहिए कि रूसी क्रांति के विकास का समग्र इतिहास क्या था, विश्व क्रांति की स्थिति क्या थी, रूस के समाज का आम विकास किस तरह का था इत्यादि। रूसी मजदूर वर्ग और उसकी पार्टी की समग्र गति इससे तय हो रही थी। सभी लोगों की तरह बोल्शेविक पार्टी और स्तालिन भी अपने समय द्वारा तय सीमाओं का अतिक्रमण नहीं कर सकते थे अथवा बहुत सीमित दायरे में ही कर सकते थे।

पार्टी के अंदरूनी मसले में भी यही बात थी। अभी फरवरी क्रांति तक एक गैर ज़नवादी रहे समाज में क्रांति के बाद तुरंत ही ज़नवादी केन्द्रीयता के उसूलों का हमेशा समुचित पालन नहीं किया जा सकता था। इस बात से इतर कि पार्टी में ज़नवाद और केन्द्रीयता के बीच अंतर्विरोध हमेशा मौजूद रहेगा, रूस जैसे समाज में इस संबंध में दिक्कततलब स्थितियां पैदा होनी स्वाभाविक थीं। ऊपर से यह ऐतिहासिक तथ्य कि समाजवादी क्रांति में सत्ता पर कब्जा तो महज शुरुआत होती है और क्रांति का काल कम्युनिज्म की स्थापना तक के समूचे काल तक फैला होता है। इस काल में भीषण वर्ग-संघर्ष जारी रहता है जो पार्टी में लाइनों के बीच संघर्ष के रूप में अभिव्यक्त होता है तथा जो अक्सर ही पार्टी के भीतर तीव्र संघर्षों का रूप धारण कर लेता है। पार्टी से निष्कासन तथा अंततः गिलोटीन इसका सामान्य परिणाम होता है। यदि बुर्जुआ क्रांतियों में यह हुआ तो समाजवादी क्रांति में तो यह और भी बड़े पैमाने पर होता है। पार्टी के भीतर यह भीषण संघर्ष, निष्कासन तथा गिलोटीन पार्टी में जनवाद के अभाव का द्योतक नहीं बल्कि क्रांति की निरंतरता और प्रगति का द्योतक है। इसमें विराम तभी आता है जब पार्टी का चरित्र बदल जाता है। लेकिन तब भी नव सत्तारूढ़ संशोधनवादी पूंजीवादी पथगामी एक भीषण कत्लेआम को अंजाम देते हैं। प्रतिक्रियावादी क्रांति से इसी तरह बदला लेते हैं और उसे समेटते हैं।

क्रांति के बाद बोल्शेविक पार्टी के भीतर और बाहर ज़नवाद का वह तथाकथित उल्लघंन लेनिन के समय ही शुरू हो गया था जिसका आरोप स्तालिन पर लगाया जाता है। यह आमतौर पर क्रांति का तथा खासतौर पर रूस जैसे पिछड़े गैर ज़नवादी समाज में क्रांति व समाजवाद के निर्माण का अनिवार्य परिणाम था। जब मेंशेविक प्रतिक्रांतिकारियों के साथ मिलकर सोवियत सरकार का तख्ता पलटने के लिए खूनी जंग लड़ रहे हों तो उनके साथ 'ज़नवादी' व्यवहार नहीं किया जा सकता था। इसी तरह जब पूरी पार्टी खूनी संघर्षों में उलझी हो तो पार्टी के भीतर अंतहीन बहसों, गुटबाजी और अराजकता की ऐश नहीं पाली जा सकती। कहने की बात नहीं कि मजदूर वर्ग की क्रांति के लिए यह समूचा दौर एक लम्बे काल खण्ड में फैला होता है जिसे समाजवाद कहते हैं। पूंजीवाद से कम्युनिज्म के बीच का समूचा काल ही संक्रमणकालीन काल होता है और उसमें खूनी संघर्षों और तद्जन्य परिणामों से नहीं बचा जा सकता।

आज जब कम्युनिस्ट क्रांतिकारी वास्तविक क्रांतिकारी संघर्षों तथा पिछली क्रांतियों के समय से अधिकाधिक दूर हैं तब इस संबंध में ढेरों विभ्रमों का पैदा होना स्वाभाविक है पिछली क्रांतियों की पराजय तथा बुर्जुआ वर्ग का हमला उनकी चेतना पर असह्य बोझ डालकर इन विभ्रमों की ओर उन्हें धकेलता है। चाहे-अनचाहे वे जनवाद की बुर्जुआ धारणाओं का शिकार होने लगते हैं। इसके प्रभाव में वे कम्युनिस्ट पार्टी की लेनिनवादी धारणा से ढुलककर दूसरे इंटरनेशनल की धारणा की ओर जाने लगते हैं।

जनवाद के बारे में हमें यह हमेशा याद रखना चाहिए कि पूंजीवाद में यह आमतौर पर हासिल नहीं किया जा सकता और कम्युनिज्म में यह विलुप्त हो जाता है, उसकी जरूरत नहीं रह जाती। बीच के संक्रमणकालीन दौर में, समाजवाद में यह हमेशा ही क्रांति की जरूरतों के अधीन होता है। इसीलिए अमूर्त रूप में जनवाद की बातें करना निरर्थक ही नहीं घातक है। अमूर्त जनवाद पर शोर-शराबे से कुछ भी हासिल नहीं होता सिवा बुर्जुआ विभ्रम के।

चीन की कम्युनिस्ट पार्टी का माओकालीन इतिहास बोल्शेविक पार्टी की तरह ही लेनिनवादी पार्टी की अवधारणा की सत्यता की पुष्टि करता है। केवल यही नहीं कि एक बेहद लम्बे क्रांतिकारी युद्ध में पार्टी ने मजदूर वर्ग का नेतृत्व किया बल्कि सत्ता पर कब्जा करने के बाद समाजवादी निर्माण और फिर सांस्कृतिक क्रांति के दौरान इसके सुदृढ़ीकरण में पार्टी की अहम् नेतृत्वकारी भूमिका स्थापित हुई। क्या बिना कम्युनिस्ट पार्टी के, वह भी माओ के नेतृत्ववाली कम्युनिस्ट पार्टी के चीन में समाजवाद के निर्माण की कल्पना की जा सकती है ?क्या इसके ठीक विपरीत डेंग के नेतृत्ववाली संशोधनवादी पार्टी ने ही चीन में पूंजीवाद की पुनर्स्थापना नहीं की?जब लोग अमूर्त रूप में यह सवाल करते हैं कि सोवियत संघ और चीन में पूंजीवाद की पुनर्स्थापना का मजदूर वर्ग ने विरोध क्यों नहीं किया तो वे मजदूर वर्ग और उसकी पार्टी के वास्तविक संबंध को भूल जाते हैं। बल्कि इस संबंध के बारे में उनकी एक खास तरह की समझ ही उन्हें इस तरह का सवाल करने की ओर ले जाती है। इसमें मजदूर वर्ग के बारे में स्वतः स्फूर्ततावादी सोच कहीं न कहीं अंतर्निहित होती है इसमें कहीं न कहीं यह अंतर्निहित होता है कि मजदूर वर्ग अपने तयीं कम्युनिस्ट चेतना तक, कम्युनिज्म तक की यात्रा की सभी जटिलताओं की चेतना तक पहुंच सकता है। अन्यथा तो क्यों यह उम्मीद की जाती कि जो परिघटना स्वयं कम्युनिस्टों के लिए दुरूह साबित हो रही थी, उसे मजदूर वर्ग स्वयं समझ लेता और न केवल समझ लेता बल्कि विद्रोह कर देता?इसके लिए स्तालिन तथा माओ को और उनके नेतृत्व वाली पार्टियों को कोसना तो और भी ज्यादा दुर्भाग्यपूर्ण है कि क्यों वे मजदूर वर्ग को इस चेतना तक नहीं उठा पाये। और जब वे यह कहने लगते हैं कि इन पार्टियों की नीतियों और कार्यपद्धति के कारण ही मजदूर वर्ग इस स्तर तक नहीं पहुंच पाया तो वे सारी सीमाएं पार कर जाते हैं। वे मजदूर वर्ग और उसकी पार्टी के बारे में अपनी सोच का दीवालियापन स्पष्ट कर देते हैं।

बोल्शेविक पार्टी की तरह चीन की कम्युनिस्ट पार्टी की आंतरिक गति भी भीषण संघर्षों की रही। क्रांति के हर मोड़ पर वर्ग-संघर्ष पार्टी के भीतर मुखरित हुआ। क्रांति एक रूप में इस अंदरूनी संघर्षों के जरिये ही आगे बढ़ी। महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रांति के दौर में तो इसने एकदम नायाब रूप धारण कर लिया जब पार्टी के क्रांतिकारी हिस्से को दूसरे संशोधनवादी हिस्से पर, 'बुर्जुआ हेडक्वार्टर' पर हमला बोलने का नारा देना पड़ा। पार्टी के भीतर हमेशा ही चलने वाला क्रांतिकारी रास्ते और क्रांति विरोधी रास्ते का संघर्ष तब चरम पर जा पहुंचा था। जनवादी केन्द्रीयता ने तब एकदम भिन्न रूप धारण कर लिया था।

समाज में चलने वाला वर्ग संघर्ष हमेशा ही पार्टी में प्रतिबिंबित होता है। यह पार्टी के भीतर लाइनों के बीच संघर्ष के रूप में अभिव्यक्त होता है। सर्वहारा लाइन के प्रस्तोता पार्टी को क्रांति की ओर तथा क्रांति के बाद समाज को कम्युनिज्म की ओर ले जाने के लिए संघर्ष करते हैं तो बुर्जुआ या पेटी-बुर्जुआ लाइन के प्रस्तोता सुधारवाद की ओर या पूंजीवादी पुनर्स्थापना की ओर। समय-समय पर यह अंत: पार्टी संघर्ष भीषण रूप धारण कर लेता है। पार्टी हमेशा ही अपने भीतर से क्रांति विरोधी और ढुलमुल लोगों को निकालकर अपने को शुद्ध करती है तथा मजबूत होती है। लेकिन ऐसे तत्वों से मुक्ति के बाद भी पार्टी में अंत: पार्टी संघर्ष खत्म नहीं हो जाता वरन नये सिरे से शुरू हो जाता है। एक के दो में विभाजन के जरिये पार्टी के भीतर लाइनों का संघर्ष हमेशा जारी रहता है। कोई पार्टी क्रांतिकारी बनी रहेगी या नहीं यह इसी बात पर निर्भर करता है कि पार्टी में कौन सी लाइन हावी होती है- क्रांतिकारी या सुधारवादी (क्रांति के बाद प्रतिक्रियावादी)। इसीलिए पार्टी के भीतर लाइनों का संघर्ष इतना महत्वपूर्ण हो जाता है। इस संघर्ष का क्या परिणाम निकलता है वह इस बात पर भी निर्भर करता है कि क्रांतिकारी मजदूर वर्ग इसमें क्या भूमिका निभाता है। पार्टी के भीतर क्रांतिकारी मजदूरों की मौजूदगी तथा पार्टी के बाहर से क्रांतिकारी मजदूरों की चौकसी इस मामले में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। सत्ताधारी कम्युनिस्ट पार्टियों के संदर्भ में तो यह अतीव महत्व ग्रहण कर लेता है अन्यथा पार्टी के जड़ होकर अपने विपरीत में बदल जाने की संभावना पैदा हो जाती है। सर्वहारा वर्ग की पार्टी तथा सर्वहारा वर्ग की राज्य सत्ता उसकी ऐतिहासिक मुक्ति के लिए अनिवार्य हैं। लेकिन इनके अस्तित्व में ही यह संभावना निहित है कि ये पतित होकर अपने विपरीत में बदल जायें तथा सर्वहारा वर्ग की मुक्ति के बदले उसकी नयी गुलामी का बायस बन जायें।पार्टी के भीतर क्रांतिकारी लाइन की प्रधानता तथा पार्टी के बाहर से क्रांतिकारी मजदूर वर्ग की चौकसी ही ऐसा होने से रोक सकते हैं।

आमतौर पर बात करें तो मजदूर वर्ग और उसकी पार्टी का एक अंतर्य है जो सभी कम्युनिस्ट पार्टियों पर लागू होता है। यह अंतर्य सुधारवादी सामाजिक जनवादी पार्टियों से एकदम भिन्न है। इसी तरह कम्युनिस्ट पार्टी की संरचना और अंदरूनी कार्य पद्धति का भी एक अंतर्य है जो सामाजिक जनवादी पार्टियों से एकदम जुदा है। लेकिन साथ ही यह बात भी है कि यह अंतर्य ठोस रूप में कैसे अभिव्यक्त होगा वह समाज विशेष के ऐतिहासिक विकास,समग्र समाज के विकास और उसकी चेतना पर निर्भर करेगा।

मजदूर वर्ग की मुक्ति की ऐतिहासिक प्रक्रिया में मजदूर वर्ग और उसकी पार्टी के बीच संबंध नेतृत्व और नेतृत्व किये जाने वाले के बीच का संबंध है। इन दोनों के बीच एक अंतर्विरोध विद्यमान है। यह अंतर्विरोध समाज विशेष के विकास के हिसाब से ही ठोस रूप में अभिव्यक्त होगा और गति करेगा। मजदूर वर्ग के विकास की निम्न अवस्था में यह एक तरह का होगा तो उसके विकास की उच्चतर अवस्था में दूसरे तरह का।पिछड़े पूंजीवादी समाजों में यह एक तरह का होगा तो विकसित पूंजीवादी समाजों में दूसरे तरह का। इसी तरह समाजवादी समाज के शुरुआती दौर में यह एक तरह का होगा तो कम्युनिस्ट समाज के नजदीक दूसरी तरह का। लेकिन जब तक मजदूर वर्ग है तब तक उसे नेतृत्व की आवश्यकता होगी और तब तक नेतृत्व करने वाली उसकी पार्टी और उसके बीच एक अंतर्विरोध भी होगा। इस अंतर्विरोध को इस तरीके से हल किया जाना कि वह लगातार मजदूर वर्ग को उसके ऐतिहासिक मिशन की प्राप्ति की ओर बढ़ाये, यह भी पार्टी का एक महत्वपूर्ण कार्यभार होगा। लेकिन कम्युनिस्ट पार्टी स्वयं इस कार्यभार में कितनी सफल हो पायेगी यह भी कुल मिलाकर समाज के समग्र विकास और उसकी गति पर निर्भर करेगा। इस रूप में मजदूर वर्ग और उसकी पार्टी दोनों अपने समय की सीमाओं से बंधे होंगे।

यही बात कम्युनिस्ट पार्टी की अंदरूनी गति पर भी लागू होती है। पार्टी में जनवादी केन्द्रीयता का अंतर्विरोध हमेशा मौजूद रहेगा। लेकिन जनवाद और केन्द्रीयता के बीच का अंतर्विरोध किस रूप में परिचालित होगा, उसकी गति और परिणति क्या होगी यह समाज विशेष के समग्र विकास और उसमें क्रांति के विकास पर निर्भर करेगा। यह किसी अमूर्त सूत्र को लागू करने का मामला नहीं है। यह समाज और उसमें क्रांति की समग्र गति का ही एक हिस्सा होगा। कम्युनिस्ट पार्टी चूंकि मजदूर वर्ग की क्रांति को संगठित करने वाली तथा उसमें मजदूर वर्ग को नेतृत्व देने वाली पार्टी है इसलिए उसकी आंतरिक गति भी इसी से निर्धारित हो रही होगी। ठीक इसीलिए यह समाज और क्रांति की विकास की अवस्था के हिसाब से निर्धारित हो रही होगी।

यहां यह ध्यान रखना होगा कि मजदूर वर्ग की पार्टी स्वयं उस ऐतिहासिक प्रक्रिया का हिस्सा होगी जिसके द्वारा मजदूर वर्ग अपना ऐतिहासिक मिशन पूरा करेगा। इस तरह से मजदूर वर्ग की पार्टी कहीं अलग से टपकी यंत्र नहीं होगी जो मजदूर वर्ग को खींचकर उसकी मुक्ति की ओर ले जायेगी। यह पार्टी क्रांतिकारी मजदूर वर्ग से पैदा होगी और उसे नेतृत्व प्रदान करेगी। यदि क्रांति की स्थितियां

और क्रांतिकारी मजदूर वर्ग नहीं होगा तो या तो यह पार्टी अस्तित्व में नहीं आ पायेगी या फिर अपने कार्यभार को अंजाम नहीं दे पायेगी। इस तरह पार्टी की नेतृत्वकारी भूमिका और उसकी अंदरूनी गति मजदूर वर्ग और उसकी क्रांति की व्यापक गति से विच्छिन्न नहीं हैं।

मजदूर वर्ग और उसकी पार्टी के संबंध के बारे में तथा पार्टी की अंदरूनी गति के बारे में आम और विशिष्ट दोनों पहलुओं पर ध्यान तथा खासकर इनकी गति पर ध्यान अति आवश्यक है।

V
अंत में

आज जब पुरानी पराजय को पीछे छोड़ते हुए सारी दुनिया में ही मजदूर वर्ग संघर्ष के मैदान में उतर रहा है, जब वह स्वयं ही सुधारवादी और बुर्जुआ पार्टियों से अपना पिंड छुड़ा रहा है तब उसे नेतृत्व प्रदान करने के लिए उसकी वास्तविक पार्टी की, कम्युनिस्ट पार्टी की आवश्यकता अत्यंत मुखर रूप में पेश हो रही है। ऐसे में कम्युनिस्ट क्रांतिकारी अपनी विरासत से प्राप्त कम्युनिस्ट पार्टी की अवधारणा के बारे में जरा भी गाफिल होने का शौक नहीं पाल सकते। यह अक्षम्य होगा। इस पर खड़े होकर उन्हें हर देश में एकीकृत कम्युनिस्ट पार्टी के निर्माण के कार्यभार को पहले कभी के मुकाबले ज्यादा शिद्दत से अपने हाथ में लेना होगा। आज मजदूर वर्ग में अपने काम का उनका यह प्रस्थान बिन्दु होगा।

नोटः- (इस लेख में अन्य क्रांतिकारी वर्गों के संदर्भ में कम्युनिस्ट पार्टी की भूमिका का तथा जनवादी, नव-जनवादी क्रांति के संदर्भ में मजदूर वर्ग व उसकी पार्टी की भूमिका का कोई जिक्र नहीं है। क्रांति के संबंध में ये महत्वपूर्ण बिंदु हैं लेकिन लेख के मूल जोर को देखते हुए इन्हें यहां स्थान नहीं दिया गया है।)

■■■